Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

डॉ.तुलसीराम कृत 'मुर्दहिया' और ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'जूठन' आत्मकथाओं में दलित संघर्ष

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

Submitted to

LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY

in partial fulfillment of the requirements for the award of degree or

MASTER OF PHILOSOPHY (MPhill.) IN HIndi

Submitted By

Shivani

Regd. No. 11512023

Hindi Deptt

Lovely Professional University

Supervised By

Dr. Hardeep Kaur Samra

Asst.Prof.(Hindi Deptt.)

Lovely Professional University

FACULTY OF ARTS & LANGUAGES

LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY,Phagwara PUNJAB

2016

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

घोषणा-पत्र

मैं शिवानी घोषणा करता/ करती हूँ कि मैने 'डॉ. तुलसीरम कृत मुर्दहिया और ओमप्रकाश बाल्मीकि कृत जूठन आत्मकथाओं में दलित विमर्श' विषय पर लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के अन्तर्गत हिन्दी विषय की एम.फिल.की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध डॉ. हरदीप कौर समरा, असिस्टेंट प्रोफ़ैसर, स्कूल ऑफ़ आर्टस एंड लैंग्वेजेज़, लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के निर्देशन में स्वयं पूर्ण किया है तथा यह मेरा मौलिक कार्य है।

मैं यह भी घोषणा करता / करती हूँ कि मेरे द्वारा प्रस्तुत्त यह लघु शोध-प्रबन्ध आंशिक अथवा पूर्ण रूप से किसी अन्य उपाधि के लिए अन्य किसी विश्वविद्यालय को प्रस्तुत्त नहीं किया गया है।

दिनांक. 28-11-2016

नाम. शिवानी
रजि. 11512023
एम. फ़िल. (हिन्दी)

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री/ श्री. शिवानी ने 'डॉ. तुलसीरम कृत मुर्दहिया और ओमप्रकाश बाल्मीकि कृत जूठन आत्मकथाओं में 'दलित विमर्श' विषय पर लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के अन्तर्गत हिन्दी विषय की एम.फिल.की उपाधि आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध मेरे निर्देशन में स्वयं पूर्ण किया है।तथा जो इनका मौलिक कार्य है।मेरे संज्ञान में यह लघु शोध-प्रबन्ध आंशिक अथवा पूर्ण रूप से किसी अन्य उपाधि के लिए अन्य किसी विश्वविद्यालय को प्रस्तुत्त नहीं किया गया है।

मैं प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध को एम. फ़िल.(हिन्दी) की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु मुल्यांकनार्थ प्रस्तुत्त करने की संतुति प्रदान करती हूँ।

दिनांक. 28-11-2016

डॉ. हरदीप कौर समरा (19894)

असिस्टेंट प्रोफ़ैसर,

स्कूल ऑफ़ आर्टस एंड लैंग्वेजेज़,

लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

प्राक्कथन

समाज में भेदभाव निरंतर चलता आया है।सामाजिक परिवर्तन और विकास के बाद भी आज के समय की एक बड़ी सच्चाई है-जातिगत भेदभाव।जातिगत भेदभाव के कारण समाज के वर्ग जो आर्थिक सामाजिक स्तर से पिछड़ा हुआ है , और निम्न स्तरीय जीवन जीने को विवश है जिसको कितने दुख ,पीड़ाओं से गुजरना पड़ता है , इसका अनुमान लगाना भी कठिन है।दलित की पीड़ा का अनुभव करना हो तो उसकी आत्मकथा के माध्याम से कर सकते है ।दलित लेखिका कंवल भारती का कहना है। दलित वह जिस पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया है।जाति आधारित समाज में दलित अस्पृश्यता उत्पी ड़न,घृणा शोषन ओर घोर प्रता ड़ना के शिकार होते हैं।दलित साहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है ,जिसमें दलितों ने स्वयं अपनी पी ड़ा को रुपायित किया है।भारतीय सामाजिक संरचना वर्ण विकास और ज्योतिबा फूले तथा डॉ.अम्बेडकर के विचारों और संघर्ष के प्रभाव से उत्पन्न परिस्थितियों के कारण जो जनतांत्रिक वातावरण निर्मित हुआ। उसमें भी दलितों की स्थिति में कोई विशेष या अमूल परिवर्तन नहीं हुआ।दलित साहित्य की जो रचना होती है वहीं दलित की श्वेणी में आते है।जब से सृष्टि का सृजन हुआ है तभी से लेकर आज तक हमारे समाज में दो वर्ग उभर कर सामने आये हैं।एक है शासक वर्ग और दूसरा है शोषित वर्ग। शासक वर्ग के पास आज पैसा है,संपत्ति है उन्हीं के हाथों में वास्तविक सत्ता है।ये लोग इसका सदभावना से उपयोग करने के बजाय अपनी रोटी पर घी और मक्खन उ ड़ेलने का काम कर रहे हैं।दूसरा शोषित वर्ग है जिसे शक्तिहीन ,अर्थहीन एवं मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया है।यह वर्ग सामाजिक ,आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछ ड़ा हुआ है।इसे स्वाभिमान,स्वमान और चेतना से जर्जरित रखा गया है।सदियों से लेकर आज तक मानव-दानव नर,नारी देव देवियां एक ही जाति धर्म लिंग प्रदेश प्रांत राष्ट्र राजनीति शिक्षा संस्थाएं धरती से स्वर्ग तक शूद्र से लेकर ब्राह्मण तक यही व्यवस्था विद्यमान रही है ,जो आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है।हमारी बौद्रिक दासता यही रही है कि सिर्फ दलित पिछड़े वर्ग के लोग ही है।लेकिन यह मान्यता ,धारणा सरासर गलत है।आज के प्रगतिशील समय में दलित की परिभाषा बदल गई है।दलित में केवल अछूत जाति का उल्लेख करना उचित नहीं है,चाहे उसकी जाति ब्राह्मण ही क्यों न हो ?दयनीय और कष्टमय जीवन बिताने वाले सभी मजदूर,किसान,नौकर जैसे सभी लोग जो आर्थिक तौर पर मजबूत नहीं है वह सब दलित है।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

दलित साहित्य बहुत से विचारको ने लिखा है।इसी तरह दलित लेखक डॉ.तुलसीराम ने अपनी आत्मकथा में अपने संघर्षमयी जीवन को प्रस्तुत किया है।उस समय दलितों पर बहुत अत्याचार होते थे। उनको किन-किन परिस्थितियों से गुजरना प ड़ा था,उसका उल्लेख उन्होंने अपनी आत्मकथा में किया।इसमें उन्होंने दलितों की पी ड़ा का उजागर किया है।जो यथार्थ से मेल खाता है।उन्होंने अपनी आत्मकथा में अंधविश्वास का भी उल्लेख किया है।ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा जूठन में उन्होंने जातिभाद को प्रस्तुत किया हैं।ओमप्रकाश वाल्मीकि की जू ठन ऐसे ही सत्य को अभिव्यक्त करने वाली आत्मकथा है।वाल्मीकि जी कहते हैं आजादी के पांच दशक पूरे होने पर और आधुनिक के तमाम आयातित अथवा मौलिक रूपों को भीतर तक आत्मसात कर चुकने के बावजूद आज भी हम कहीं न कहीं सवर्ण और अवर्ण के दायरों में बँटे हुए है।मानव किसी को मानव समझकर उसे प्रेम नहीं करता,जाति भेदभाव निरंतता से चलता आ रहा हैं।आज चाहे समाज में व्यक्ति कितना भी बदल गया हैं ।परन्तु उसका मन आज भी नहीं बदला हैं।वह आज भी कहीं न कहीं घृणा की भावना रखता है।जाति भेदभाव के चलते निम्न वर्ग को कितने दुख पी ड़ाओं का सामना करना प ड़ा हैं।लोग दलित को कुचला दबा हुआ समझते हैं।उसका हर क्षेत्र में शोषण होता है।दलितों पर जो अत्याचार हो रहे हैं।वह आज भी कहीं न कहीं मौजूद हैं।जूठन ऐसी ही आत्मकथा हैं जिसने ऐसा दु:ख भोगा है।मानव प्यार का भूखा होता है जिसे वह समाज ,परिवार से प्राप्त करता हैं।दलित मानव भी प्रेम का भूखा हैं।वह हमेशा यहीं चाहता है कि समाज में उसे सम्मान और प्रेम मिले , प्रेम एक मानव को बढ़ावा देता हैं।जूठन में जाति से उत्पन्न छूत अछूत भेदभाव घृणा,सच्चाई पश्चांताप दु:ख आंसू घूट-घूट कर दम तो ड़ देता हैं।एक मानव दूसरे को मानव समझकर प्रेम नहीं करता।उसकी जाति को जानने के बाद उसको प्रेम करता हैं।

प्रस्तुत शोध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है।प्रथम अध्याय 'सैद्वान्तिक पृष्ठभूमि' में शोध कार्य का समस्या कथन,समस्या का औचित्य, शोध कार्य के उद्देश्य,परिकल्पना, शोध के लिए प्रयुक्त होने वाली प्रवृतियों के साथ साथ पूर्व सम्बद्व साहित्य पर भी प्रकाश डाला जाएगा।इसके बाद जो सिद्वान्त लिया गया है उसका अर्थ,परिभाषा,इतिहास,तत्व और संबन्धित लेखन के व्यक्तित्व और कृतित्व को उजागर किया जाएगा।

द्वितीय अध्याय ड़ॉ. तुलसीराम और ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथाओं मुर्दहिया और जूठन के सामाजिक पक्ष में परिवार, शिक्षा, समुदाय, वातावरण को प्रस्तुत किया जाएगा।

Dr.Tulsiram krit ‘Murdahiya’ our Om Prakash Balmiki krit ‘Joothan’ aatmkathaon main dalit sangharsh

तृतीय अध्याय डॉ.तुलसीराम और ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथाओं मुर्दहिया और जूठन के धार्मिक पक्ष में अंधविश्वास,परम्परागत रुढ़ियाँ को अभिव्यक्त किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय डॉ. तुलसीराम और ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथाओं मुर्दहिया और जूठन के आर्थिक पक्ष में गरीबी, अकाल की स्थिति पर प्रकाश डाला जाएगा।

पंचम अध्याय डॉ.तुलसीराम और ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथाओं मुर्दहिया और जूठन के राजनीति पक्ष में पंचायतीराज का वर्णन,पार्टिबाजी को उजागर किया जाएगा।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन 3-5

प्रथम अध्याय: सैद्धांतिक पृष्ठभूमि 1-23

1.1 समस्या कथन

1.2 समस्या औचित्य

1.3 शोध के उदेश्य

1.4 परिकल्पना

1.5 शोध प्रविधि

1.6 पूर्व सम्बन्धित साहित्यावलोकन

1.7 दलित का सैद्धांतिक पक्ष

1.7.1 दलित का अर्थ, परिभाषा

1.7.2 दलित का इतिहास

1.7.3 दलित साहित्य को प्रभावित करने वाले तत्व

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

1.7.4 रचनाकार का व्यक्तित्व और कृतित्व

द्वितीय अध्याय: मुर्दहिया और जूठन आत्मकथाओं में सामाजिक पक्ष 24- 47

2.1 परिवार

2.2 शिक्षा

2.3 समुदाय

2.4 वातावरण

तृतीय अध्याय: मुर्दहिया और जूठन आत्मकथाओं में धार्मिक पक्ष– 48- 61

3.1 अंधविश्वास

3.2 परम्परागत रूढ़ियाँ

चतुर्य अध्याय: मुर्दहिया और जूठन आत्मकथाओं में आर्थिक पक्ष 62- 72

4.1 गरीबी

4.2 अकाल की स्थिति

पंचम अध्याय: मुर्दहिया और जूठन आत्मकथाओं में राजनीतिक पक्ष 73- 81

5.1 पंचायती राज का वर्णन

5.2 पार्टीबाजी

Dr.Tulsiram krit ‘Murdahiya’ our Om Prakash Balmiki krit ‘Joothan’ aatmkathaon main dalit sangharsh

छठा अध्याय: दलितों पर हो रहे अत्याचार को दूर करने हेतु उपाय और सुझाव 82- 84

उपसंहार 85- 92

सन्दर्भ ग्रंन्थ सूची

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

प्रथम अध्याय

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

समस्या-कथन

समय के साथ साथ समाज के लोगों की सोच में भी परिवर्नत आने लगता है।लेकिन यह परिवर्तन सिर्फ मूल मात्र ही दिखाई देता है।दलित समाज की आज जो स्थिति हैं वह काफी दयनीय है ,और उसमें रहने वाले लोगों की सोच से बहुत बदलाव आया है,लेकिन यह भी उतना सच है कि दलित को लेकर समाज की सोच उतनी नहीं बदली जितनी बदलनी चाहिए।समय में तो परिवर्तन आ गया लेकिन लोगों की सोच में परिवर्तन आज भी नहीं आ पाया।मनुष्य किसी को मनुष्य समझकर प्रेम नहीं करता उसकी जाति को समझकर उसे प्रेम करता है।हमारे समाज को दलितों के प्रति अपनी सोच बदलनी होगी तभी हम सम्य प्राणी कहला सकेगें।इसी चीज को उजागर हमारा करना हमारा मुख्य उद्देश्य है।

समस्या औचित्य

यदि हम समाज में 'साकारात्मक' बदलाव चाहते है,तो हमें खुद ही ऐसे मुद्दे उठाने चाहिए जो सामाजिक बदलावों में सहायक हो।आज भी हमारे देश में वर्ण जाति भेदभाव कायम हैं। हमारा देश तब तक उन्नति नहीं कर सकता जब तक हम सभी एकता में नहीं होगे।आज भी भारत में छूआछूत की बीमारी विद्यमान है।जिससे परस्परं दो विरोध उत्पन्न होता जा रहा है।आज यह समस्या एक गम्भीर रुप लेती जा रही हैं।मैं अपनी इस शोध के द्वारा इस समस्या को उजागर करुंगी तथा इसे दूर करने के प्रत्यन्न करुगी ,जिससे समाज में नवीन भावना का विकास होगा।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

उद्देश्य

1.समाज में दलितों पर हो रहे भेदभाव को प्रस्तुत करना

आज चाहे समाज में व्यक्ति कितना भी बदल गया हैं।परंतु उसका मन आज भी नहीं बदला हैं। वह आज भी कहीं न कहीं घृणा की भावना रखता है।जाति भेदभाव के चलते निम्न वर्ग को कितने दुख पीड़ाओं का सामना करना पड़ा हैं।लोग दलितों को कुचला दबा हुआ समझते हैं।

2.साहित्य में दलित पर किए जा रहे कार्य का मूल्यांकन करना

हिन्दी साहित्य में जो दलितों ने अपने जीवन में भोगा है।उसे अपनी आत्मकथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है।जातिय भेदभाव निरंत्रता से चलता आ रहा है।हिन्दी साहित्य में दलितों पर कई तरह के कार्य हो रहे हैं।

3.दलितों पर हो रहे अत्याचार को दूर करने हेतू उपाय और सुझाव

हमारी बौद्धिक दासता यही रही है कि सिर्फ 'दलित पिछडे वर्ग के लोग ही है।लेकिन यह मान्यता,धारणा सरासर गलत है।हमें भी इन परिभाषाओं से अवगत होना जरूरी हो गया है।क्योंकि हमें समय के साथ चलना है।समय रुकता नहीं है।समय की पुकार है कि दलित शब्द को संकुचित दृष्टि से ना देखते हुए विशाल रुप में वैशिवक धारतल पर देखें।

4.वर्ग विहीन एवमं जाति विहीन समाज की कल्पना की कामना करना

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

जब से सृष्टि का सृजन हुआ है तभी से लेकर आज तक हमारे समाज में दो वर्ग़ उभर कर सामने आये हैं।एक है शासक वर्ग और दूसरा है शोषित वर्ग। शासक वर्ग हमेशा शोषित वर्ग पर अत्याचार करते आये है।आज के प्रगतिशील समय में दलित की परिभाषा बदल गई है।

परिकल्पना

.मुर्दहिया आत्मकथा के द्वारा सामाजिक बिंदुओं को ऊाया गया

हमारे समाज में आज भी दलितों पर अत्याचार किए जाते है।उच्च श्रेणी के लोग निम्न श्रेणी के लोगों से कई तरह का काम करते हैं ।निम्न श्रेणी के लोगों को हर अधिकार से वंचित रखा जाता था।वह अधिकार शिक्षा का हो या कामकाज हो उन्हें हर क्षेत्र में घृणा से देखा जाता है।ऐसी ही घटनाओं को मुर्दहिया आत्मकथा में दिखाया गया हैं।

. हमारे आस -पास की घटनाओं का प्रभाव मुर्दहिया आत्मकथा में दिखाई देता है-

जातिय भेदभाव के कारण एक वर्ग जो पिछ ड़ा हुआ था।जिन्हें सामाजिक स्तर पर निम्न दिखाया गया था।मुर्दहिया आत्मकथा में कई तरह की घटनाओं को दिखाया गया हैं।उस समय दलितों कि छुना भी पाप समझा जाता था।कोई जानवर मरने पर दलितों को उठाने के लिए बोला जाता था।वह मरे जानवरों का मांस खाते थे।दलितों के बिना कोई मरे पशु नहीं उठाते थे।

.मुर्दहिया आत्मकथा में दलितों की मनोविज्ञानिक स्थिति का वर्णन किया गया है-

आज भी लोग कहीं न कहीं दलितों के प्रति नाकारात्मक सोच रखते हैं।लोग मनुष्य को मनुष्य समझकर नहीं उसकी जाति को प्रेम करता है। दलित कितना भी बडा महान् काम कर लें उसे उसकी जाति का ताना मिल जाता हैं। जिससे उनकी सोच सिमट कर रह गई हैं।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

. जूठन में दलितों के यथार्थवादी रुप को प्रस्तुत किया गया है-

जूठन ऐसी ही आत्मकथा है जिसने कई दु ;ख भोगे हैं।जूठन आत्मकथा के माध्यम से बताया गया हैं कि हमें जूठन भी मुफ्त में नहीं मिलती थी।उसके लिए सारा दिन कामकाज करना पड़ता था।जूठन आत्मकथा में यथार्थवादी रूप को दिखाया हैं।

. जूठन आत्मकथा में दलितों के विविध रुपों की प्रस्तुत किया गया है-

जूठन आत्मकथा में दलितों के विविध रूपों को प्रस्तुत किया है।दलितों का शिक्षित ना होना जिसके कारण उन्हें कई तरह के कष्ट सहने प ड़े।दलित लोगों का अंधविश्वास को मानना , आदि कई रूपों को दिखाया हैं।

शोध प्रविधि

किसी भी कार्य को परखने और उसकी गुणवत्ता का पता लगाने के लिए विभिन्न विधियां पर्याप्त है।हमें न तो किसी एक विधि से सभी कार्य कर सकते है।और न ही किसी एक कार्य में सभी विधियों का इस्तेमाल कर सकते है।इसलिए हम उन विधियों का प्रयोग करेगें जिससे हमारा कार्य सफल हो जाएं।

• मनोवैज्ञानिक विधि

हम कथा साहित्य में मनोवैज्ञानिक को आधार बनाकर अध्ययन कर रहें है।पूरे साहित्य को पढ़कर अपने विषय को देखकर हमारे विषय के जो पात्र हैं।वहां कहां तक अध्याय करते हैं। इसलिए यह विधि अधिक उर्युक्त हैं।

• समाजशास्त्रीय विधि

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

समाज और साहित्य का गहरा संबंध हैं।एक मनुष्य समाज में रहकर बढ सकता है।समाज के बिना उसका जीवन मृत्यु के बिना सामान है। आज जो भी कथा लिखी जाती है।वह समाज पर आधारित होती है , उसका संबंध समाज से होता हैं।वह समाज पर आधारित होती है। इसलिए हम अपने शोध कार्य में समाज शास्त्रीय विधि का प्रयोग किया गया।

• तुलनात्मक विधि

इसमें एक ही भाषा अथवा दो या अधिक भिन्न भाषाओं के समान ,कवियों,कृतियों अथवा प्रवृत्तियों का सत्र और विषय तत्वों की दृष्टि से अध्यायन किया जाता है।

पूर्वसाहित्यावलोकन.

• ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र,दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001.

ओमप्रकाश जी ने इस पुस्तक में दलितों के बारे में लिखा हैं ।दलित का साहित्य किसी सुंदरता से कम नहीं और इस पुस्तक में बहुत सारे विचारको ने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं।

• शिवबाबू मिस्त्र , जूठन एक विमर्श,दिल्ली, शिल्पायन प्रकाशन, 2006

इस पुस्तक में शिवबाबू ने जूठन के बारे में की जो कि ओमप्रकाश द्वारा लिखी गई हैं।जूठन को एक विमर्श के रूप में प्रस्तुत किया हैं।जूठन भी किसी को मुफ्त में नहीं मिलती थी ,उसके लिए भी सारा दिन काम करना पड़ता था।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

• सुनीता रावत, हिंदी दलित साहित्य के परिप्रेक्ष्य में ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन,गाजियाबाद,साहित्य संस्थान 2010

सुनीता रावत ने इस पुस्तक में ओमप्रकाश जी को साहित्य का परिप्रेक्ष्य मानते हुए ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य के बारे मे लिखा हैं।

सागर चन्द्र ,चन्द्र,जगदीश के उपन्यास में दलित विमर्श ,एम.फिल, दिल्ली, यूनिर्वसिटी 2014

सागर ने अपने शोधकार्य में दलितों पर कार्य किया हैं। उसने इसमें बताया हैं कि दलितों पर लोग अत्याचार करते थे।और उपन्यास में भी दलितों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का वर्णन किया गया है।

आर.एस.वाढेर, दलितविमर्श एवं ओमप्रकाश वाल्मीकि का साहित्य, पी.एच.डी, सौराषट्र यूनिर्वसिटी, 2015

इस थिथीसी में वाढेर ने ओमप्रकाश वाल्मीकि का हिंदी में क्या साहित्य हैं ।और जूठ्न के माध्यम से उनके जीवन के बारे में पता चला कि उनका जीवनकाल कैसा था।

मनोज कुमार ,मुर्दहिया का आलोचनात्मक अध्ययन ,पी.एच.डी.जवाहरलाल नेहरु विश्वविधालय, नई दिल्ली 2011

मनोज ने मुर्दहिया की आलोचनात्मक अध्ययन पर कार्य किया हैं , मुर्दहिया एक आत्मकथा हैं जो डॉ.तुलसीराम द्वारा लिखी गई हैं।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

• देवेन्द्र चौबे , आधुनिक साहित्य में दलित विमर्श, नई दिल्ली, ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, 2009

इस पुस्तक में देवेन्द्र चौबे ने आज के साहित्य को देखते हुए दलित विमर्श का वर्णन किया हैं , उन्होंने लिखा हैं दलितों की आज भी कही ना कही दलितों पर शोषण हो रहे ,और अत्याचार मौजूद हैं।

• ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित विमर्श, नई दिल्ली, शिल्पायन प्रकाशन, 2003

दलित विमर्श पुस्तक में दलितों के बारे में वर्णन किया है।दलितों का साहित्य कब से शुरू हुआ और दलित क्या इतिहास है,उस को प्रस्तुत किया गया हैं।

• जयप्रकाश कर्दम , दलित विमर्श साहित्य के आईने में साहित्य संस्थान , गाजियावाद, 2006

इस पुस्तक में दलित विमर्श को एक आईने का रूप देकर दलितों साहित्य का वर्णन किया गया हैं।

• श्योराज वेचैन , देवेद्र चौबे, चिंतन की परम्परा, हजारी बाग, 2000

इस पुस्तक में दोनों रचनाकार ने दलित साहित्य को चिंतन की परम्परा के माध्यम से प्रस्तुत किया गया हैं।

दलित का सैद्धांतिक पक्ष

हम जब भी कोई शोध-कार्य करते है और उस लघू शोध-प्रबंध में जिस भी किसी विषय का चुनाव करते हैं तो हमें उस विषय का सिद्धांत अवश्य मालूम होना चाहिए।हम जिस विषय को आधार बनाकर अपना शोध-कार्य आरंभ करते हैं,हमें उस विषय का अर्थ उस विषय से सम्बन्धित अलग- अलग विचारकों की परिभाषाएँ और हमें उस विषय का स्वरूप और तत्वों की जानकारी होना अति आवश्यक है।इस प्रकार अगर हम अपने विषय के सिद्धांत को अच्छे ढंग से समझ लेगें तो हमें आगे अपने शोध-कार्य में कोई कठिनाई नहीं आएगी।इस शोध कार्य में दलित को विषय के रूप में लिया गया है ,उसके सैद्धांतिक पक्ष का विवेचन इस प्रकार है-

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

दलित का अर्थ एवं परिभाषाएँ

दलित शब्द का अर्थ है-जिसका दलन और दमन हुआ है , दबाया गया है ,उत्पीड़ित शोषित, सताया हुआ ,गिराया हुआ ,घृणित,रौंदा हुआ ,मसला हुआ,कुचला हुआ ,आदि। इसी प्रकार "कँवल भारती का मानना है कि दलित वह है जिस पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया है। जिसे क ठोर और गन्दे कार्य करने के लिए बाध्य किया गया है।जिसे शिक्षा ग्रहण करने और स्वतंत्र व्यवसाय करने से मना किया गया है" [1] भारत में दलित शब्द का प्रचलन कब से हुआ ? यह भी जानना अनिवार्य है।एक विशिष्ट प्रकार की अनुभुति करने वाला समाज ही दलित है इस प्रकार की घोषणा करते हुए कुछ चिंतक इस विवाद से हट जाना चाहते हैं जिससे पाठक भ्रमित हो जाते है।इस विशिष्टि प्रकार की सामाजिक स्थिति का क्या तात्पर्य है, इस बात को समझ लेना आवश्यक है।शब्दकोश के अनुसार 'दलित' शब्द के भिन्न- भिन्न अर्थ मिलतें हैं।जैसे "हरदेव बाहरी के हिन्दी शब्द के अनुसार दलित का अर्थ है कुचला हुआ- दबाया हुआ,तो कहीं दलित शब्द को इस रुप में दिया है- दल उक्त अर्थात् टूटा हुआ, चीरा हुआ,फटा हुआ,टुकडे- टुकडे हुआ।दलित शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत धातु 'दल' से हुई है।[2]" दलित शब्द की अपनी विशेषता है।दलित वह व्यक्ति है , जो संकिचित सामाजिक स्थिति का अनुभव करता है , जिसे मात्र जन्म के आधार पर समाज में एक ही प्रकार का जीवन जीने का अवसर मिला है।मनुष्य के रुप में उनके मूल्यों को नकारा गया है।दलित वहीं है जो सामाजिक अछूत, शुद्र बहिष्कृत उत्पीडीन और पिछडा हुआ वर्ग है।इससे भी आगे जो समाज में रहकर संकुचित और हीन भावना का अनुभव करता है।अमेरिकन विदुषी एलनार जिलियट ने 'दलित' संज्ञा के बारे में लिखा है। " dalit is a common identity of those

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

Indians who are particular socially neglected untouchables suppressed and backward"[3] दलित होने का मतलब सिर्फ अनुसूचित जाति,अनुसूचित जन जाति , वर्ण,धर्म जाति देश नहीं है।बल्कि मनुष्य की पतितावस्था ,दुरावस्था तथा उसकी लाचारी और शोषण,अधिकारों से वंचित आदि को देखा जाता है।सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से जिनका शोषण होता है ,स्वतंत्रता,समता और प्रगति से अपरिचित रह कर जो अपने मालिक की प्रामाणिक दासता निभाता है और जिसके जीवन में ज्ञान या प्रकाश के अभाव में अज्ञान या अंधेरा छाया हुआ व्यक्ति दलित है।"डॉ. आनंद वास्कर के मतानुसार गाँधी जि ने 'हरिजन' श्री मगाटे ने 'अस्पृश्य' और डॉ. अंबेडकर ने 'बहिष्कृत' और 'अछुत' शब्द प्रयोग किया है।भारत में 50-60 साल पूर्व से दलित शब्द का प्रयोग हो रहा है। दलित की व्यत्पत्ति संस्कृत धातु 'दल' से हुई है"[4] 'दल' के विभिन्न अर्थ हैं जैसे-संस्कृत शब्द्कोश दल- अविकसित,फटना,खंडित होना,दुविधा होना।दल-सक ,चूर्ण करना,टुकडे करना।दल-नपृ सैन्य ,लश्कर,पत्र,पत्ती।दल-(दलित)दलित-टूबसर्ट,ओपन स्पिलट क्लेव।" दलित हृदय गाढीद्वेंग द्विधा तू न विद्यते''(वेदनाओं के कारण हृदय के टुक ड़े- टुकड़े होते हैं ,नाश नहीं)संस्कृत शब्दकोशों की तरह ही मराठी शब्द कोशों में भी दलित शब्द का अर्थ विनिष्ट किया हुआ है जैसे-मराठी शब्दकोश दल-नाश करणे(विनष्ट करना)दलित-नाश पास्सवबेला(विनष्ट हुआ) हिन्दी शब्दकोशों में भी दलित शब्द का अर्थ विनिष्ट किया हुआ है.जैसे-दलित मसला हुआ,मर्दित।दबाया,रौंदा हुआ या कुचला हुआ,खंडित,विनिष्ट किया हुआ।दलित शब्द का अर्थ विभिन्न शब्दकोशों में विभिन्न रूपों में प्राप्त होता है।ई. स.1993 में सरकार ने जातिय निर्णय लिया था उसमें'डिप्रेड क्लासेस' शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ है पददि्लत।वास्तव में

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

पददलित शब्द दलित शब्द के लिए ही पर्यायवाची शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।गाँव की सीमा के बाहर वाली सभी अछूत जातियाँ,आदिवासी,भूमिहीन,खेत मजदूर,श्रमिक,कष्टकारी जनता, और यायावर जातियाँ सभी दलित शब्द से व्याख्यायित होती है।दलित शब्द की व्याख्या में केवल अछूत जाति का उल्लेख करना पर्याप्त नहीं होगा , इसमें सामाजिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से पिछ ड़े हुए लोगों का भी समावेश हुआ है। ऐसे लिग भी अपने आप को आहार-व्यवहार में पिछड़े हुए अथवा दीन-हीन समझते हैं किन्तु वे दलित नहीं है।सच्चे अर्थों में तो दलित वही लोग हैं जो पिछ ड़ी जाति के साथ-साथ सामाजिक , आर्थिक और शैक्षणिक दृष्टि से पिछ ड़े हुए है ,केवल वहीं दलित हैं। इक्कीसवीं सदी का दलित शब्द आधुनिक है लेकिन 'दलितपन' प्राचीन है।प्राचीन साहित्य में शूद्र ,अतिशूद्र, चांडाल,अंत्यज अस्पृश्य आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है जब कि ये सभी शब्द दलित के पर्याय हैं।अस्पृश्य शब्द का अर्थ स्पर्श करने में अपात्र होने के कारण घृणास्पद हो गया।बाद में पंचम,हरिजन,बहिस्कृत जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ।ये सारे शब्द दलित शब्द के ही बदले हुए रूप हैं।इस प्रकार दलितों शब्द के अनेकों रूप समाज में प्रचलित थे किन्तु आधुनिक संदर्भो में सिर्फ दलित का ही प्रयोग प्रचलित है।

•डॉ. श्योराज सिंह बेचैन दलित शब्द की व्याख्या करते हुए कहते हैं-" दलित वह है जिसे भारतीय संविधान ने अनुसूचित जाति का दर्जा दिया है।"[5]

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

•बाबूराज बागूल के शब्दों में कहे- "मानव की मुक्ति को स्वीकार करनेवाला,मानव को महान् माननेवाले,वंश,वर्ण और जाति स्रेठत्व प्रबल विरोध करनेवाले साहित्य ही दलित साहित्य है।"[6]

•ओमप्रकाश वाल्मीकि लिखते -"दलित साहित्यकारों का उद्देश्य मात्र दलितों पर हुए अत्याचारों,अन्याय,शोषण का विवरण प्रस्तुत करना ही नहीं है ,बल्कि सवर्ण हिंदुओं को आत्मशोधन के लिए मजबूर करना भी है। यहीं है दलित साहित्य की प्रतिबद्ता"[7]

•जयप्रकाश कर्दम के अनुसार -"दलित साहित्य दलित समाज को भारतीय राष्ट्र को एक सुत्र में पिरोने का कार्य करता है।"[8]

• माता प्रसाद जी लिखते हैं – "दलित साहित्यकार स्वानुभुति का साहित्य लिखता है और गैर दलित साहित्यकार सहानुभुति का।"[9]

• डॉ. धर्मवीर लिखते हैं-"दलित का साहित्य रुदाली तक सीमित नहीं माना जा सकता है। अपितु वे दलित के स्वपन ,दलित की कल्पना और दलित के ख्यालों को दलित साहित्य में शामिल करते हैं।"[10]

•डॉ. चंद्रकान्त बांदीवडेकर – "दलित यानी अनुसूचित जातियाँ , बौद्विक कष्ट उठानेवाली जनता,मजदूर भूमिहीन गरीब किसान, खाना बदोश जातियाँ आदिवासी दलित शब्द की यह

जाति निरपेक्ष व्यापक परिभाषा है। गांधी जी ने जिन जातियों को हरिजन कहा था वे ही जातियाँ दलित के नाम से पहचानी गई"।[11]

मराठी साहित्यकार नामदेव ढ़साल के मत से - "दलित म्हामजे,अनुसूचित जाति जमाती , बौद्द कष्टकारी ,जनता,कामगार,भूमिहीन-खेत मजूर गरीब शेतकरी भटक या जमानी आदिवासी"।[12]

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी लिखते हैं- "दलित शब्द भाषावाद, अलगावाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद को नकारता है तथा पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करता है।दलित शब्द उन्हें सामाजिक पहचान देता है जिनकी पहचान इतिहास के पृष्ठों में सदा के लिए मिटा दी गई है, जिनकी गौरवपूर्ण संस्कृति,ऐतिहासिक धरोहर कालचक्र में को गई"[13]

राजेंद्र लहरिया कहते हैं- "साहित्यसाहित्य और रचना सिर्फ भोगे हुए जैसी चीजों के सहारे नहीं होती , इसके लिए अपने समय और समाज की समझ , गहरी मानवीय संवेदना और विलक्षण रचनादृष्टि आवश्यक होती है" [14]

विद्वानों के उपर्युक्त कथनों से विदित होता है कि दलित साहित्य का मूल स्वर लोगो को जागृत करना है। दलित लेखक अस्पृश्यता का व्यवहार और जातिगत विशेषाधिकार की व्यवस्था को स्वीकार नहीं करता है।दलित सहित्य का मुख्य उद्देश्य दलितों के जीवन में भारत की अन्य जातियों के समान अधिकार चेतना जगाना है ताकि वे विकास के अवसरों , साधनों और सामाजिक न्याय की शक्तियों से वंचित न रहें। ताकि सभी को एक समान अधिकार मिले सकें।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

दलित विमर्श का इतिहास

हिन्दी साहित्य के इतिहास में जिन दलित रचनाकारों का उल्लेख आया है वे सामाजिक बदलाव की चेतना जगा पाने में असमर्थ रहे हैं।पारम्परिक आदर्शों एवं मान्यताओं से भिन्न उनकी मान्यताएं या सोच दूरगामी परिणाम नहीं दे पाई ।इतिहासकारों का कहना है कि हिन्दी के सिद्ध कवियों में अनेक दलित थें।भक्तिकाल में भी कई संतकवि दलित थे।लेकिन परिवर्तन की सुगबुगाहट होती ।सिर्फ भक्तिकाल में ही नहीं बल्कि 60 से 90 दशक में कई रचनाकार आए लेकिन उनकी अभिव्यक्ति दलितों की पीडा के साथ अपनी अन्तरंगता स्थापित नहीं कर पाई। वे वर्ण-संघर्ष से परे वर्ग -संघर्ष की जद्दोजहद में शामिल होकर अपने व्यापक फलक पर देखने के भ्रम को पालते रहे। वस्तुस्थिति का सामना करने के बजाए भारतीय समाज-व्यवस्था के इकहरे सपनों में खोए रहे।दलित साहित्य की दग्धता से बाहर ही रहे। दलित साहित्य के सरोकारों में दलित चेतना की महत्वपूर्ण भूमिका है।इस चेतना के बिना साहित्य लिजलिजा और काल्पनिक उड़ानों मानदण्ड निर्मित कर रहा है।यह साहित्य समाज के दु ;ख दर्द से जु ड़कर मनुष्य की ल ड़ाई से भरपूर ही माना जाएगा।वर्तमान हिन्दी का दलित लेखक अपनी रचना के माध्यम के निरंतर नए लड़ता हैं।इसके उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए मोहनदास नैमिशराय कहते हैं- "शोषक वर्ग के खिलाफ अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते हुए समाज से समता ,बंधुता तथा मैत्री की स्थापना करना ही दलित साहित्य का उद्देश्य है।" [15] हिन्दी में रचित दलित साहित्य उद्देश्य की पूर्ति करता हैं साहित्य में मराठी में दलित विर्मश आया।हिन्दी में दलित साहित्य की गूंज सन् 1980 के बाद ही सुनाई देनी शुरु हुई और आज यह लेखन मुख्य धारा में हैं इसका

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

अनुमान हंस के संपादक राजेन्द्र यादव की इस बात से लगाया जा सकता है की "यदि हमारा साहित्य इसके लिए जगह नहीं छोड़ता तो वह शीघ्र ही अप्रसंगिक हो जाएगा।यादव जी का यह कथन हिन्दी में दलित चिंतन की सशक्त अभिव्यक्ति और प्रबल हस्ताक्षेप को रेखांकित करता हैं।"[16] दलित साहित्य का ऐतिहासिक अवलोकन करने पर हमें विभिन्न रूपों और विभिन्न धाराओं में दलित साहित्य देखने को मिलता है।तब यह कहना उचित नहीं होगा कि यह साहित्य केवल डॉ अम्बेडकर के उदय के बाद शुरू हुआ है अथवा मराठी से खास कर दलित पैंथर से आया है।यह हिंदी-क्षेत्र में दलित की अधिकार चेतना के उभार का साहित्यिक परिणाम है।बौद्ध काल में स्वयं गौतम बुद्ध ने बाह्मणी वर्ण-व्यवस्था पर चोट की और उन्होंने क्षत्रियों का दर्जो ब्राह्मणों से ऊँचा कर लिया था।उदाहरण के लिए ,उन्होंने सुनीति नामक भंगी को अपने संघ में सम्मिलित करके सामाजिक दृष्टि से एक क्रांतिकारी परंपरा की शुरुआत की थी।मराठी दलित साहित्य का यही आधार रहा है। अर्थात् वर्ण-व्यवस्था का विरोध आज दलित साहित्य का एक प्रमुख स्वर है।

महामानव गौतम बुद्ध ने सवर्ण जातियों के दिलों में दलितों के प्रति संवेदना के बीज बोए जिसके फलस्वरुप बुद्ध के बाद संस्कृत के ब्राह्मण विद्वान अश्बघोष ने वज्रसूची की रचना की।इस रचना में असमान नीति पर आधारित ब्राह्मणी वर्ण-व्यवस्था व जाति-प्रथा का विरोध किया गया था।" डॉ. तुलसीराम का मानना है- बुद्धचरित के रचनाकार अश्बघोष पहले संस्कृत के कवि थे ,जिन्होंने ब्राह्मणी वर्ण-व्यवस्था पर आक्रमण करते हुए बज्रसूची नामक काव्य-ग्रंथ लिखा।यद्यपि अश्बघोष ब्राह्मण बौद्ध थे,फिर भी मैं उनकी पुस्तक बज्रसूची को दलित साहित्य की रचना मानता हूं [17]महात्मा ज्योतिबा फूले के विचार नि :संदेह ही दलित साहित्य के प्रेरणा-स्त्रोत रहे हैं।उन्होंने शिक्षा रूपी मंत्र फूंक कर दलितों में चेतना

जगाई।महाराष्ट्र में दलित साहित्य की शुरुआत डॉ.अम्बेडकर के बाद ही हुई।"डॉ. विमलकीर्ति का मानना है कि मराठी के दलित साहित्य से पूर्व बाबा साहब डॉ.अम्बेडकर के साहित्य व सामाजिक आंदोलन ने चेतना फैलाई, सन् 1964 में दलित साहित्य, साहित्य के रूप में उभर कर आया"[18] इसका स्वर साहित्यिक आंदोलन के रूप में तब फैला जब अस्मितादर्श पत्रिका की शुरुआत हुई।पत्रिका शुद्व रूप से डॉ.अम्बेडकर के लोकतांत्रिक विचारों और तत्कालीन दलित साहित्य की तमाम विधाओं को लेकर चल रही है।उन दिनों बाबा साहब अम्बेडकर महाराष्ट्र में दलितों का नेतृत्व कर रहे थे , तो उत्तर भारत में स्वामी अछूतानंद का दलितों के बीच व्यापक प्रभाव था।इससे जाहिर है कि स्वामी अछूतानंद उत्तर भारत के अछूतों में सामाजिक जागृति का आंदोलन चला रहे थे।वह निरे संत नही थे न ही समाजविरत संन्यासी,बल्कि गृहस्थ जीवन का निर्वाह करते हुए राजनीतिक,सामाजिक रूप से क्रांतिकारी और बौद्विक नेता थे।वे सदियों से दबी-कुचली जनता की उन्नति हेतु सक्रिय थे।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि उड़िया, गुजराती और पंजाबी इत्यादि अनेक भाषाओं में आज स्वयं दलितों द्वारा सृजित दलित साहित्य का उभार तीव्रातर हो चुका है। हिंदी से इतर क्षेत्रों में गांधी-अम्बेडकर से प्रभावित दलित साहित्य पहले ही लिखा और प्रचारित किया जा चुका है। हिंदी के दलित साहित्य का उदय बीसवीं शताब्दी के नवें तथा दसवें दशकों में हुआ और कई हिंदी लेखकों को सातवें दशक में उभरे मराठी के दलित साहित्य से खासाकर डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा से प्रेरणा मिली।हिंदी का दलित साहित्य अब अपना व्यापक स्वरूप ग्रहण कर रहा है , पर पिछली शताब्दियों में भी दलित साहित्य बीज रूप में विद्यमान था।दलित जनसंख्या की का एक बडा हिस्सा आज भी पी ड़ित-शोषित जीवन

गुजार रहा है।आज आवश्यकता है ऐसे साहित्य की जो इनमें शिक्षा के प्रति जागरुकता उत्पन्न कर सके और अपने अधिकारों के प्रति सजग बना सके।

दलित साहित्य को प्रभावित करने वाले तत्त्व

वर्ण व्यवस्था विरोध,जातिभेद विरोध,साम्प्रदायिकता विरोध

दलित साहित्य को प्रभावित करने वाले कई तत्व है , जैसे जाति व्यवस्था के लोग वर्ण को लेकर दूसरी जाति को गलत तथा वर्ण को उचित ठहराते हैं ,वर्ण व्यवस्था में चारों वर्णों के लोग एक समान नहीं है,बल्कि क्रमिक सोपान है।वर्ण व्यवस्था में अधिकार इतने भेदभावपूर्ण हैं कि दलित लोगों को हर अधिकार से वंचित रखा गया है।समाज के अधिकांश काम इन्हें करने के लिए बोला गया हैं। असल में वर्ण व्यवस्था की सुसंगत दिखाई देने वाली विचारधारा ही जाति व्यवस्था की जननी है।

अलगाववाद का नहीं, भाईचारे का समर्थन

दलित लोग समाज में मिलजूल कर रहने की भावना रखते है वह समाज से अपने लिए इज्जत कि भावना रखते हैं।अछुतों व सवर्णों में कोई प्रजातिगत भेद नहीं हैं।एक ही प्रजाति के

लोगों में विवाह व खान पान का बंधन लगाकर जाति व्यवस्था उनमें अलगाव पैदा करती है।खान पान से तो प्रजाति की शुद्वता पर कोई आंच नहीं आती , लेकिन जाति व्यवस्था में खान पान बंधन लगाया गया।

स्वतन्त्रता, सामाजिक न्याय की पक्षधरता

दलित लोग समाज में स्वत न्त्रता चाहते हैं।समाज में उन्हें कई अधिकारों से वंचित रखा जाता था।मनु द्वारा बनाई गई वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था आज भी विद्यमान हैं।इस जाति प्रथा के कारण ही समाज का एक वर्ग सदियों से अत्याचार सहन करता रहा है।इसके आधार वर्ण और जाति ने समाज में गहरी पैठ बना ली जिसका स्वरूप आज भी विद्यमान है।जाति भेदभाव मनुष्य को टुकड़ो में बांट कर रख देता है।

सामाजिक बदलाव के लिए प्रतिबद्धता

कभी यह आर्थिक इकाई के तौर पर तो कभी सामाजिक इकाई के तौर पर तो कभी राजनीतिक इकाई के तौर पर अपना रूप बदलती रही और धार्मिक बैधता ने इसे समाप्त नहीं होने दिया।जाति व्यवस्था का समाज के विभिन्न वर्गों पर अलग अलग व कई मामलों परस्पर विपरित प्रभाव प ड़ा हैं।निम्न जाति में सामाजिक सर्वोच्चता की यह भ्रांति भ्रमित चेतना का परिणाम है।

आर्थिक क्षेत्र में पूँजीवाद का विरोध

आर्थिक क्षेत्र में दलितों ने पूँजीवादी का विरोध किया हैं ,पूँजीवादी लोग दलितों पर बहुत अत्याचार करते थे,दलित लोग सारा दिन काम करते थे उन्हें उनकी मेंहनत के पैसे तक नहीं

देते थे,कई बार उनकी फसल को सस्ते भाव से खरीद लेते थे। मार्क्स ने आर्थिक उत्पादन के साधनों पर संपूर्ण जोर दिया है,वहीं आर्थिक निर्णय को अंतिम निर्णय नहीं माना है।

सामन्तवाद, ब्राह्मणवाद का विरोध

ब्राह्मण लोग समाज में अपने आप को सबसे उच्च मानते थे।वह समाज में सबसे उच्च कार्य करते थे, इसिलिए वह दलित लोगों को छुना भी पाप समझाते थे।इसलिए सामन्तवाद लोगों ने ब्राह्मणवाद का विरोध किया इस पर बहुत सारे विचारकों ने भी लिखा हैं ,जैसे-मुंशी प्रेमचन्द ब्राह्मण विरोधी नहीं थे ,हां वे ब्राह्मणीवादी विचारधारा के आलोचक जरूर थे।ब्राह्मणवादी विचारधारा मुख्यत:दो स्तम्भों पर टिकी है वर्ण व्यवस्था और पितृसत्ता।इन दोनों ने समाज में असमानता को वैधता देकर घृणा व विभाजन पैदा किया है।

अधिनायकवाद का विरोध

जाति व्यवस्था उच्च वर्ग की उत्पत्ति है जो निम्न वर्ग में फूट डालकर उसकी एकता को छिन-भिन्न करती है। जाति व्यवस्था के नियमों या आचार संहिता की अनुपालना हमेशा निम्न वर्गों से की जाती है।कोई प्रभावी व्यक्ति जाति व्यवस्था की कथित आचार संहिता को तोड़ता है तो उस पर कोई दण्डात्मक कार्यवाई नहीं की जाती।शोषित वर्ग की एकता को तो ड़ने के लिए जाति व्यवस्था काम आ रही है।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

रचनाकारों का व्यक्तित्व और कृतित्व

ओमप्रकाश वाल्मीकि

जी का जन्म-30 जून1950 को ग्राम बरला, जिला मुजफ्फरनगर,उत्तर प्रदेश में हुआ।आपका बचपन सामाजिक एवं आर्थिक कठिनाइअयों में बीता।आपने एम.ए तक शिक्षा प्राप्त की , पढ़ाई के दौरान उन्हें अनेक आर्थिक, सामाजिक और मानसिक कष्ट व उत्पीड्न झेलने पड़े

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

वाल्मीकि जी जब कुछ समय तक महाराष्ट में रहे तो वहाँ दलित लेखकों के संपर्क में आए और उनकी प्रेरणा से डॉ. भीमराव अंबेडकर की रचनाओं का अध्ययन किया।इससे आपकी रचना- दृष्टि में बुनियादी परिवर्तन आया।

आप देहरादून स्थिति आर्डिनेस फैक्टरी में एक अधिकारी के पद से पदमुक्त हुए।हिंदी में दलित साहित्य के विकास में ओमप्रकाश बाल्मीकि की महत्वपूर्ण भूमिका है।आपने अपने लेखन में जातीय-अपमान और उत्पीडन का जीवन का वर्णन किया है और भारतीय समाज के कई अनछुए पहलुओं को पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया है।आपका मानना है कि दलित ही दलित की पी ड़ा को बेहतर ढंग समझ सकता है और वही उस अनुभव की प्रामाणिक अभिव्यक्ति कर सकता है।अपने सृजनात्मक साहित्य के साथ- साथ आलोचनात्मक लेखन भी किया गया।

आपकी भाषा सहज, तथ्यपूर्ण और आवेगमयी है जिसमें व्यंग्य का गहरा पुट भी दिखता है। नाटकों के अभिनय और निर्देशन में भी आपकी रुची थी।अपनी आत्मकथा जूठन के कारण आपको हिंदी साहित्य में पहचान और प्रतिष्ठा मिली।1993 डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार और 1995 में परिवेश सम्मान,आपको1996 में कथाक्रम सम्मान और 2001 को न्यू इंडिया बुक पुरस्कार,2004 को साहित्यभूषण से अलकृत किया गया।2006 को 8वाँ विश्व हिन्दीं सम्मेलन से 2007को न्यूयार्क,अमेरिका में पुरस्कार मिला।17 नवंबर 2013 को देहरादून में आपका निधन हो गया।

Dr.Tulsiram krit ‘Murdahiya’ our Om Prakash Balmiki krit ‘Joothan’ aatmkathaon main dalit sangharsh

डॉ. तुलसीराम जी का जन्म- 1 जुलाई 1949 , आजमगढ जिले के धरमपुर के एक गांव में हुआ।इनके पिता जी का तेरसी और माता का नाम धीरजा था।आपका बचपन सामाजिक और आर्थिक कठिनाइअयों में बीता ।

प्राथमिक शिक्षा आपकी गांव के पास दूसरे गांव में हुई। आपने एम. फिल व पी. एच. डी की। शिक्षा के दौरान उन्हें अनके आर्थिक, सामाजिक और मानसिक कष्ट व उत्पीड्न झेलने पड़े।

तुलसीराम जी कुछ समय तक आजमहग ढ़ में रहे तो वहाँ राहुल सांकृत्यायन से बहुत प्रभावित हुए ।उन से प्रभावित होकर यह एक राजनीतिज्ञ बने।इन्होंने राहुल सांकृत्यायन की सभी रचनाओ का अध्ययन किया।इससे आपके जीवन में काफी परिवर्तन आया।

शिक्षा के बाद आप नौकरी करने के लिए कलकत्ता गया।कलकत्ता जाकर बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ा।अपने सृजनात्मक साहित्य के साथ-साथ आलोचनात्मक लेखन भी किया हैं।

प्रकाशित कृतियां: 'अंगोला का मुक्ति संघर्ष'. 'सी.आई. ए. : राजनीतिक विध्वंस का अमरीकी हथियार',' द हिस्ट्री आफ कम्युनिस्ट मूवमेंट इन ईरान ,' पर्सिया टू ईरान' (वन स्टेप फारवर्ढ टू स्टेप्स बैक) ' आइडिओलाजी इन सोवियत- ईरान रिलेशन्स ' (लेनिन टू स्टालिन) तथा ' मुर्दहिया ' आदि शामिल हैं।

डॉ.तुलसीराम को अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध आन्दोलन , दलित राजनीति तथा साहित्य में भी विशेषज्ञता हासिल थी।उन्होंने इन विषयों पर सैकडों लेख लिखे। एक कट्टर धर्मनिरपेक्ष विद्धान के रुप में मार्क्स, बुद्ध तथा डॉ. अम्बेडकर उनके हीरो रहे। उन्होंने 'अश्वघोष' नामक

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

प्रसिध्द बुध्दिस्ट एवं साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन भी किया।

निधन: 13 फरवरी, 2015.

हम कह सकते हैं कि लोग जितने भी पढ़ लिख जाए।उसके बावजूद भी उनका दृष्टिकोण नहीं बदला।दलित एक जाति समूह सूचक शब्द है।यह एक वर्ग है जिसमें अनेक जातियां सम्मिलित हैं। समाज में व्यक्ति कितना भी बदल गया है।परंतु उसका मन आज भी नहीं बदला है। वह आज भी कहीं न कहीं घृणा की भावना रखता है। हिन्दी साहित्य में जो दलितों ने अपने जीवन में भोगा है।उसे अपनी आत्मकथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जातिय भेदभाव निरंत्रता से चलता आ रहा है। हिंदी के दलित साहित्य का उदय बीसवीं शताब्दी के नवे तथा दसवे दशकों में हुआ और कई हिंदी लेखकों को सातवें दशक में उभरे मराठी के दलित साहित्य से खासकर डॉअम्बेडकर की विचारधारा से प्रेरणा मिली।हिंदी का दलित साहित्य अब अपना व्यापक स्वरूप ग्रहण कर रहा है ,पर पिछली शताब्दियों में भी दलित साहित्य बीज रूप में विद्यमान था। भले ही वह साहित्य की मुख्य धारा नहीं बन सका। उस बीज को लेखकों, विचारकों और समाज-सुधारकों ने अंकुरित किया तथा अब वह पल्लवित पुष्पित रूप में हमारे सामने है ,पर अधिसंख्य रचनाएं साधन-सुविधाओं के अभाव में अप्रकाशित हैं।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

सन्दर्भ सूची

1.श्यौराज सिंह बेचैन युध्दरत आम आदमी(अंक41-42), 1998,पृ 13

2. कँवल भारती- युध्दरत आम आदमी(41-42) पृ 14

3. बाबूराव बागूल- दलित साहित्य आज का क्रांति विज्ञान, पृ 15

4. सी.बी. भारती- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, हंस11,अंक1, पृ 62

5. भीमराव अम्बेडकर- दलित साहित्य सम्मेलन पत्रिका, पृ 73

6. अरुण कमल- कविता और समय, पृ 75

7.रजतरानी मीनू- नवें दशक की हिंदी दलित कविता, पृ 77

8. हिंदी साहित्य ,युग और प्रवृत्तियां –शिवकुमार शर्मा, पृ, 23

9 . प्रेमचंद: साहित्य और संवेदना: पी.वी. विजयन (सं.) पृ.88.

10 .दलित-चेतना: साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार: रमणिका गुप्ता,पृ, 93

11. ओमप्रकाश वाल्मीकि,दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ 16

12.श्रीभगवान सिंह,गाँधी और दलित भारत- जागरण, पृ 20

13. ओमप्रकाश वाल्मीकि,दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ 40

14. बृजेश कुमार यादव, दलित साहित्य की अवधारण,पंकज गौतम, सबके दावेदार, पृ49

15..सुभाष चन्द्र,दलित मुक्ति आन्दोलन, पृ25

16. श्यौराज सिंह, बेचैन, उत्तर सदी के हिंदी कथा-साहित्य में दलित विमर्श, पृ76

द्वितीय अध्याय

'मुर्दहिया' और 'जूठन' आत्मकथाओं में सामाजिक पक्ष

समाज मनुष्यों का एक समूह है।कई समूहों का एक वृहत् समुदाय है।यह मनुष्यों के आपसी सम्बन्धों का पुंज है।अनेक मनुष्यों की जीवनावधि से सम्बन्धित होने के कारण उनके आपसी जटिल सम्बन्धों के इस पुंज को समाज की संज्ञा दी जा सकती है।समाज शब्द सम् उपसर्ग पूर्वक अज गतिक्षेपणयों धातु से धम् प्रत्यय करने पर समाज शब्द निष्पत्र होता है।समाज शब्द का अर्थ वृहद् हिन्दी कोष के अनुसार इस प्रकार है-मिलना तथा एकत्र होना।एक स्थान पर मिलकर रहने वाले लोगों के समूह को समाज कहा जाता हैं। समाज को यथार्थ रूप को साहित्य के माध्याम से प्रस्तुत किया जाता है।समाज शब्द का प्रयोग व्यायक रूप में किया जाता है। दो या दो से अधिक व्यक्तियों के समूह को समाज कहा जाता हैं मानव का व्यक्तित्व जन्म से ही पूर्ण नहीं होता है , क्योंकि मानव जब शिशु के रूप में जन्म लेता है तब वह मात्र रुधिर, हड्डी, माँस का लोथडा होता है। इस नवजात शिशु के पास न तो भाषा होती है,न समझ,न ही उसमें विचार शक्ति होती है और न ही कोई नियम तथा संस्कृति।जन्म के समय बच्चा एक जैविकीय प्राणी के रूप में होता है।धीरे-धीरे इसका समाज और संस्कृति के मध्य पलते हुए समाजीकरण होता है।मानव जाति का इतिहास विकास,उत्थान एवं प्रगति का रहा है ,पतन या अवनयन का नहीं।समाज के बारे में अनेक विद्वानों ने इस प्रकार परिभाषा दी है।

श्रीमति सुरजीत कौर के अनुसार, "व्यक्ति के पारस्परिक सम्बन्धों के रूप को जब यह सम्बन्ध संस्थात्मक रूप में धारण कर लेते हैं,उसे समाज कहा जाता हैं"[1]

परिवार

परिवार एक ऐसी सामाजिक इकाई है जिसमें कुछ मनुष्य मिलकर रहते है। समाजीकरण का परिवार से होता है।परिवार का वातावरण ,संस्कृति,सदस्यों का आचरण शिक्षा स्तर,आर्थिक स्तर,प्ररिवारिक संरक्षण,सहयोग,पालन-पोषण आदि का बालको के सामाजिक विकास पर प्रभाव पड़ता है।बालक अपने माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के जैसा आचरण तथा व्यवहार करने का प्रयास करता है।परिवार में रहकर मनुष्य को कई मुसीबतों का सामना करना प ड़ता है।इसी तरह डॉ.तुलसीराम और ओपप्रकाश वाल्मीकि ने अपने जीवन में कई मुसीबतों का सामना करना प ड़ा।उनका संघर्ष घर से ही शुरू हो गया था।परिवार की अनेक विद्ववानो ने अनेक प्रकार से परिभाषाएं की है।

रेमन्ट के अनुसार- "घर ही वह स्थान है जहां वे महान् गुण उत्पन्न होते हैं जिनकी सामान्य विशेषता सहानुभूति है।घर में घनिष्ठ प्रेम की भावनाओं का विकास होता है।यहीं बालक , उदारता-अनुदारता,निस्वार्थ और स्वार्थ ,न्याय और अन्याय ,सत्य और असत्य ,परिस्रम और आलस्य में अन्तर सीखता है"[2]

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

परिवार में रहकर व्यक्ति सब कुछ सीखता हैं।इसी तरह डॉ.तुलसीराम ने अपनी आत्मकथा मुर्दहिया में लिखते हैं कि किन्न-किन्न परिस्थितियों से गुजरकर उनका जीवन व्यतीत हुआ है।नफरत का कारण था चेचक का रोग जिसके कारण उनकी एक आँख की रोशनी चली गई थी।जिसके कारण घर के लोग उन्हें चि ढ़ाते थे।बचपन में ही डॉ.तुलसीराम को चेचक का रोग हो गया था ,जिसके कारण मुँह में गहरे गहरे दाग प ड़ गये थे ,जिसके लिएइनको अपशकुनी बना दिया था।तुलसीराम को बाहर के लोग कम अपशकुनी मानते थे,और जब घर वाले लोग ही अपशकुनी मानने लगे तो वह किनका-किनका विरोध करते।

डॉ तुलसीराम लिखते हैं " मैं जैसे-जैसे बड़ा होता गया,वैसे-वैसे मेरा अपशकुन और अपमान भी बृह्द् होता गया,विशेष रूप में परिवार के अंदर।बाद में थोडा समझदार होने पर दादी ने बताया कि चेचक निकलने के पहले घर में सबसे छोटे के कारण परिवार के सभी सदस्यों में मुझे गोद में लेकर खेलाने की होड लगी रहती थी,किंतु चेचक के बाद सब कुछ बदल गया।" [3]

इस प्रकार डॉ.तुलसीराम ने अपनी आत्मकथा मुर्दहिया में लिखा है कि वह बचपन से ही घृणा का शिकार हुए थे।बचपन से ही उन्हें चेचक का रोग हो गया था ,चेचक एक भयानक बीमारी है जिसे छोटी माता भी बोलते है ,चेचक का रोग होने पर शरीर के सारे हिस्सों पर धब्बे पड़ जाते है इसे तरह तुलसीराम जी के मुंह में चेचक के धब्बे प ड़ गये थे।जिसके कारण घर के बच्चे उन्हें चि ढ़ाते थे,जब तुलसीराम छोटे थे तो सब उनसे प्यार करते थे ,बड़े होने पर सब कुछ बदल गया सब घर वाले इन्हें चि ढ़ाने लगे और घृणा करने लगे।जिसके कारण यह अपने आप को अपशकुन मानने लगे थे।परिवार के वातावरण से बच्चा सीखता हैं ।उसे जैसा

माहौल मिले गया वह वैसा हो जाएगा।परिवार के लोग जैसा व्यहार बालक के साथ करेंगे उसका परिवेश भी वैसा ही होगा।तुलसीराम कहते है उनका परिवेश भी घृणा के साथ हुआ था।उनकी मां चाहकर भी कुछ नहीं कह पाती थी।जिसके कारण मन में घृणा मन में दुसरों के प्रति होगी थी।

"वे सभी मुझे अकसर 'कनवा-कनवा कहकर पुकारते थे। घर में कई अन्य भी कभी-कभी ऐसा ही कहते थे,इसके अलावा यह कि कभी भी कोई वैसा कहने से मना नहीं कर पाता।यहां तक कि मेरी मां भी सिसकियां भरते हुए चुप रह जाया करती थी ,जिसका कारण था उन व्यक्तियों का क्रूर व्यवहार" [4]

बचपन से ही डॉ.तुलसीराम को अपना जीवन धुंधला सा लगने लगा।चेचक के कारण तुलसीराम की दाई आंख की रोशनी चली गई थी ,जिसके कारण घर में सब इनको कनवा कहते थे।मां सब को मना करना चाहती थी ,कितुं घर वालों से डरती थी ,जिसके कारण कुछ नहीं कह पाती थी।चुपचाप अंदर ही अंदर रोती थी।तुलसीराम को लगता था की उसका जीवन खत्म हो चुका हैं।वह अपने आप को अशुभ समझने लगे थे।अशुभ मानने के कारण भी वह लोगों के लिए मिसाल बने ।उन्हेंने सबका विरोध किया और यह विरोध उनका घर से ही शुरू हो गया था ,घर में मां और दादी ही मुझे प्रेम करती थी ,जिसके कारण उन्हें अपना जीवन कभी धुंधला दिखाई नहीं देता था,और वह पढ़ने में भी सबसे आगे रहे।

"इस संदर्भ में मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि इस धुंधली गिनती की परीक्षा से उत्पन्न पीड़ा मेरे जीवन की पहली मानसिक पी ड़ा थी।अशुभ- अपशकुन वाली पी ड़ा की अनुभूति कुछ देर

से आई।इन्हीं पी ड़ाओं में मेरा सारा बचपन विलुप्त हो गया और में अल्पापु में ही अत्यंत संवेदनशील बन गया" [5]

घर पर सब भाई-बहन उनका मजाक बनाते थे ,और उन्हें मनोरंजन का खेल खेलते समझते थे,धीरे धीरे यह खेल घृणा में बदलने लगा था ,और मानसिक पीड़ा घर परिवार से ही शुरू हो गई थी।घर के लोगों का इन्हें चि ढ़ाना वर्षो तक चला ,जिसके लिए इन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी और अपनी जिंदगी को आगे ब ढ़ाया और एक महान् व्यक्ति बने।आज भी लोग अशुभ अपशकुन को बहुत मानते हैं,

"हमारा संयुक्त परिवार बहुत बड़ा था,किन्तु घर में एक भी रजाई या कम्बल नहीं था।वैसे भी घर में कपडों की कमी हमेशा रहती थी।मेरे पिता जी पूरी धोती कभी नहीं पहनते।वे एक ही धोती के दो टुक ड़े करके बारी-बारी से पहनते।ओ ढ़ने का कोई इंतजाम न होने से गांव के लगभग सारे दलित रात भर ठिठुरते"[6]

तुलसीराम लिखते है कि वह एक गरीब परिवार में रहते थे।उनका संयुक्त परिवार था , परिवार के सारे लोग काम करते थे।उसके बावजूद भी गरीबी हमेशा रहती थी।सर्दियों के दिनो में कप ड़े तक नहीं होते होते थे।सारी सर्दी ठं ड में सोते थे ना ऊपर लेने के लिए कोई कपड़ा होता था , ना चारपाई होती थी। सारी रात नीचे सोते थे।सारी जिन्दगी गरीबी में रहना पड़ता था।बरसात के दिनों में यहीं हाल होता था,सारे लोगों को एक जगह पर रहते थे और खाने को कुछ नसीब नहीं होता।जब किसी के पास मांगने जाते तो लोगों से तरह- तरह

ताने सुनने को मिलते थे।सारी जिन्दगी भुखमरी के साथ- साथ कप ड़ो की भी हमेशा कमी रहती थी।

इसी तरह ओमप्रकाश वाल्मीकि जी अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि वह एक संयुक्त परिवार में रहते थे।सारा परिवार पूरा दिन तगाओं के घर में काम करता था। पूरा दिन काम करने के बाद भी इन्हें पूरी मेंहनत नहीं मिलती थी। जिसके कारण घर में पैसा और अनाज तक नसीब नहीं होता था। लोगों के घर पुरुष तो जाते थे ,साथ में औरते भी काम करने जाती थी। सारा दिन वहां करने के बाद जूठन नसीब होती थी,कई बार तो जूठन भी मुफ्त में नहीं मिलती थी। जूठन अर्थात् जब किसी के घर शादी या कोई समारोह होना उस समय जो लोग खाने के लिए बुलाया होगा उनके द्वारा बचे खाने को जूठन कहा जाता था ,जो उन लोगों का जूठा खाना बचा होता था ,वह सारा खाना दलित लोग अपने घर लेकर जाते थे। बरसात के दिनों में इस खाने को खाते थे ,धूप में सुखा कर रखते थे ।जूठन उठाने के लिए भी लोग बहुत बातें सुनाते थे।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी लिखते हैं- "उस बगड़ में हमारा परिवार रहता था। पाँच भाई, एक बहन,दो चाचा एक ताऊ का परिवार।चाचा और ताऊ अलग रहते थे। घर में सभी कोई न कोई काम करते थे।फिर भी दो जून की रोटी ठीक ढंग से नहीं चल पाती थी।तगाओं के घरों में साफ-सफाई से लेकर खेती-बा डी,मेहनत-मजदूरी सभी काम होते थे।बेगार के बदले में कोई पैसा या अनाज नहीं मिलता था"[7]

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

घर के आर्थिक हालात इतने खराब थे ,कि जहां खाना नसीब नहीं था वहां प ढ़ाई कहां से होगी।हमारे घर में सभी लोग थे,उसके बावजूद भी घर में पैसे और अनाज की कमी हमेशा रहती थी,दलित लोग सारा दिन काम करते थे ,आदमी खेतों में और औरते सारा दिन स्वर्ण जाति वाले लोगों के घर काम करती थी।फिर उन्हें अपनी मेंहनत का पैसा नही मिलता था , और जहां तक की जूठन भी मुफ्त में नही मिलती थी उसके लिए भी लोगों के ताने सुनने को मिलते थे। जूठन पाने के लिए सारा दिन इन्तजार करना प ड़ता था,कब लोग खाना खाकर जूठन छोड़ेगें।जूठन में जो खाने में रोटी मिलती थी धुप में सुख कर रख लेते थे।घर में जो जितना भी अनाज आता था , वह सारा खत्म हो जाता था।दलित लोग आज भी सारा दिन काम करते है और उन्हें उनकी मेंहनत का पैसा नहीं मिलता था।तगाओं के घरों में काम करने के बाद वह अनाज की जगह पैसा देते थे।मंहगाई होने के कारण अनाज तक नहीं खरीद सकते थे,और स्वर्ण जाति वाले लोग फसल कटने पर उसका पूरा भाव ना लगाकर कम पैसो पर खरीदते थे। जिसके गरीब लोग अपना कर्ज भी नहीं उतार पाते थे।

"मैं पाँचवीं कक्षा पास कर चुका था।छठी में दाखिला लेना था।गाँव में ही त्यागी इंटर कालेज,बरला था,जिसका नाम बदलकर अब बरला इंटर कालेज बरला कर दिया गया है। घर के जो हालात थे उनमें दाखिला लेने का तो सवाल ही नहीं उठता था।जहाँ रोटी ही नसीब न हो,वहाँ पढ़ाई की बात कोई कैसे सोच सकता है" [8]

घर पर ना कोई प ढ़ा-लिखा था ना किसी को इतता ज्ञान था ,कि स्कूल भेजने से बच्चे कैसे शिक्षित होगे।ना ही स्कूल भेजने के लिए पैसे थे ,घर पर सारे लोग कमाते थे ,उसके बावजूद

भी घर पर पैसे तक नहीं होते थे।उस समय लोगो के आर्थिक हालात इतने खराब थे ,जिसके कारण वह अपने बच्चों को अशिक्षित रखते थे,दलित लोगों की मानसिक सोच बन गई थी की गरीब का बच्चा प ढ़ कर क्या करेगा।वह भी खेतों में ही काम करेगा।कि ना समय पर कोई पाठय-पुस्तक खरीद सकता था,ना कपड़े जो मिलता था।उसी को खा कर गुजारा किया जाता था।यह कोई पढ़ने लग भी जाता तो उसे स्कूल में अपमानित किया जाता था ,और तरह की मुश्किलों का सामना करना प ड़ता था।दलित बच्चों को जिसके कारण वह अधिकतर अशिक्षित ही रह जाते थे।

"उन दिनों मैं नौवीं कक्षा में था।घर की आर्थिक हालत कमजोर हो चुकी थी।एक -एक पैसे के लिए परिवार के प्रत्येक सदस्य को खटना पड़ता था।मेरे पास पाठय-पुस्तकें हमेशा कम रहती थीं।कपड़ो की भी वहीं स्थिति थी ,जो मिल गया ,पहन लिया।जो वक्त पर मिल गया ,खा लिया" [9]

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने अपनी आत्मकथा जूठन में लिखा है कि दलित लोगों को समाज में किस नजरिये से देखते थे,उसका अनुमान लगाना भी बहुत मुश्किल होता है।यह अत्याचार आज भी कहीं ना कहीं मौजूद है।लोगों वह परिवार में बच्चों कि मानसिक पी ड़ा को प्रस्तुत किया है।किस तरह लोगों द्वारा अपमानित होना प ड़ता था,यदि कोई हिम्मत रखता भी था पढ़ने के लिए तो उन्हे लोगों के ताने सुनने को मिलते थे ,कि यह चूहडा प ढ़ कर क्या करेगा इसी तरह स्कूल में जाकर अध्यापको से कई तरह की बाते सुनने को मिलती थी।

शिक्षा

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

शिक्षा तथा मानव जाति का जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध है।शिक्षा आन्तरिक बृद्धि तथा विकास की न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है इसकी अवधि जन्म से मृत्यु तक फैली हुई है।शिक्षा का वास्तविक अर्थ मनुष्य को मानव बनाना तथा जीवन को प्रगतिशील , सांस्कृति एवं सभ्य बनाना है।शिक्षा द्वारा ही मनुष्य अपनी विचार शक्ति तथा तर्क-शक्ति ,समस्या समाधान तथा बौद्धिकता प्रतिभा तथा रुझान ,धनात्मक भावुकता तथा कुशलता और अच्छे मूल्यों तथा रूचियों को विकसित करता है।इसी के द्वारा ही वह मानवीय ,सामाजिक,नैतिक और आध्यात्मिक प्राणी में परिवर्तित हो जाता है।मनुष्य प्रतिदिन तथा हर क्षण कुछ न कुछ सीखता है।इसका समस्त जीवन ही शिक्षा है।शिक्षा एक निरन्तर तथा गतिशील प्रकिया है।इसका सम्बन्ध सदा विकसित होने वाले मानव तथा समाज के साथ है।इसलिए यह अभी विकास करने वाली प्रक्रिया है।

विवेकानन्द जी के अनुसार- "शिक्षा मनुष्य में पहले से मौजूद दैवी पूर्णता का प्रत्यक्षीकरण है।वे आगे कहते हैं , हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो हमारा आचरण बनाये , हमारे मानसिक बल को बढाये,बौद्धिकता का विकास करें और जिसके द्वारा मनुष्य आत्म-निर्भर हो जाये"।[10]

उस समय दलितों की ऐसी स्थिति थी।वह अपने बच्चों को प ढ़ा लिखा नहीं सकते थे।उस समय अधिकर बाह्माण लोग ही प ढ़े लिखे थे।उनके अधीन दलितों को रहना प ड़ता था। दलित लोग अपना पढ़ाई- लिखाई का सारा काम बाह्माण से करते थे ।जिसके लिए बाह्माण उन्हें बहुत अपमानित करते थे।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

डॉ तुलसीराम जी के अनुसार, "हमारी दलित वस्ती में कोई प ढ़ा-लिखा नहीं था।गांव में बाह्मण ही पढ़े –लिखे थे।वे अकसर दलितों की चिट्ठियां पढ़ने में आनाकारी करते तथा पढ़ने के पहले अपमानजक बातें सुनाते।इस व्यवहार से ऊबकर घर वालों की कृपा दृष्टि सबसे छोटा बालक होने के कारण मेरे ऊपर पड़ी।परिणामस्वरुप पूर्वोक्त शिव मंदिर के पास स्थित प्राइमरी स्कूल में मुझे चिटठी पढ़ने लायक बनाने के उद्देश्य से भेजा जाने लगा"[11]

तुलसीराम को चिट्ठी प ढ़ने लायक बनाने के लिए स्कूल भेजा गया।बाह्मण लोग अक्सर बोलते थे स्कूल मत भेजो ज्यादा प ढ़ने से व्यक्ति पागल हो जाता है।उसके बावजूद भी तुलसीराम को स्कूल भेजा गया ।उस समय जाति भेदभाव था ,स्कूल में स्वर्ण जाति के छात्र दलित छात्रों के प्रति घृणा की भावना रखते थे ,दलित छात्रो को अलग से बैठाया जाता था , आध्यापक की मौजूदगी में कोई दलित छात्रों को नहीं बुलाता था।न कोई दलित अपने बच्चों को स्कूल प ढ़ने के लिए भेज भी देते थे ,तो उनको स्वर्ण जाति के बच्चे छुते तक नहीं थे।अध्यायक दलित छात्रों के साथ बहुत दुर्रव्यवहार करते थे।उनको अलग बैठते थे।उनको नाम से नहीं उनकी जाति से उन्हें पुकारते थे।

"हमारी पहली कक्षा में कुल 43 बच्चे थे जिनमें तीन ल ड़कियां थी।रोल नम्बर के हिसाब से कक्षा में टाट पर बैठाया जाता था। मे रा नाम और स्थान पहली कतार में रोल नम्बर पांच के साथ होता था।इन तेरह बच्चों में मेरे अलावा चिखरी ,रमझू,बावूराम,यदुनाथ,मुल्कू,रामकेर, दलसिंगार,जग्गन,रामनाथ,बिरजू,बाबूलाल तथा मेवा थे।शीघ्र ही इस तेरह का रहस्य

उजागर हो गया।हम सभी दलित थे।मुंशी जी की उपस्थिति में हमें कोई अन्य बच्चा नहीं छुता था।ऐसे ही वातावरण में शुरू हुई मेरी शिक्षा" [12]

उस समय दलित छात्रों की संख्या अधिक होने के कारण अपमान सहना लाजमी था। कक्षा में कई ऐसे छात्र थे जो भेदभाव को भूलकर दलित छात्रों को बुलाते थे। स समय दलित छात्रों की कोई फीस नहीं होती थी , फिर भी आध्यापक पैसे लेकर उन्हें पास करते थे ,पैसे ना देने पर इन्हें फैल कर देते थे ,तुलसीराम के घर के हालात ठीक नहीं थे जिसके कारण स्कूल में इनको फेल कर दिया था , और ऐसा कई छात्रों के साथ होता था ,जिनके कारण शिक्षा में उनका बहुत नुकसान होता था,दलित लोग इतने गरीब थे कि वह अपने बच्चों की स्कूल फीस नहीं दे सकते थे।जिसके कारण स्कूल में उन्हें फेल कर देते थे।

"हकीकत यह थी कि उन दिनों मेरे जैसी परिस्थिति वाले बच्चों के लिए दो रुपया जुटाना एक बड़ा संघर्ष था।मेरे घर वाले ब ड़ी नफरत के साथ कहते थे कि यदि पैसा ही देकर पास होना है तो इसे प ढ़ाने से क्या फायदा!वे समझते थे कि प ढ़ने में कमजोर हूं इसलिए इम्तहान में फेल हो जाता हूंगा,जिसके कारण पसकराई देना पडता है"[13]

दलितों को स्कूल जाने की अनुमति तो मिल गई थी ,किंतु जाति भेदभाव के कारण उन्हें कई तरह की मुश्किलों का सामना करना प ड़ता था।स्कूल में अध्यापक दलित छात्रों को उनके नाम से नहीं उनकी जाति से बुलाते थे।स्कूल में आध्यापक सारा काम दलित छात्रों से कराते थे,जिसके कारण दलित छात्रों के मन में हीनता की भावना वहीं से शुरु हो जाती थी।वह हमेशा यहीं सोचते थे कि वह जितना मर्जी काम कर ले फिर भी उन्हें जाति का ताना मिल

ही जाता था।दलित छात्रों को अलग बैठाया जाता था।दलित छात्रों को कोई छुता तक नहीं था।

"उस समय स्कूलों में भी छुआछुत का प्रचलन बहुत ज्यादा था और सवर्ण छात्र प्राय :दलित छात्रों से नहीं मिलते-जुलते थे"[14]

दलित लोगों के साथ दलित छात्रों भी बहुत अपमानित होना प ड़ता था।स्कूल में हुए कोई छुता तक नहीं था।अध्यापक की मौजूदगी कोई दलित छात्रों को कोई बोलता तक नहीं था। इतने अपानित होने पर भी दलित छात्र पढते थे,कापी ना होने पर जमीन पर लिखकर अपने गणित के सवाल निकालते थे।

"यह घटना सन् 1957 के जाडों की ही है ,जब मैं तीसरी कक्षा में पढ रहा था ,मैंने धीरे-धीरे पोस्टकार्ड पर लिखी आधी चिट्ठी पढ दी।यह पहला अवसर था ,जब बे मुझसे बेहद प्रसन्न होकर मेरा हाथ पकडे स्वयं सुभगिया के घर की तरफ चल प ड़े।रास्ते में जो भी मिलता , उससे वे बोल पड़ते:हई अब चिठिया पढ़ि लेत हव"[15]

सुभगिया दलित बस्ती में रहने वाली जलंधर नामक बू ढ़े की जवान बेटी थी।वह बहुत सुंदर थी।उसकी सगाई कलकत्ता में ठेला चलाने वाले लडके से हुई थी।वह अक्सर चिट्ठी भेजता था।हमारी बस्ती में कोई प ढ़ा लिखा ना होने के कारण लोग बाह्मणो के पास जाते थे।चिट्ठी पढ़ने के लिए वह कई तरह के बहाने बनाते थे ,और कई तरह की बाते सुनाते थे।तुलसीराम

को चिट्ठी पढ़ने के उद्देश्य से स्कूल भेजा गया था ,जब वह तीसरी कक्षा में पहुंचे तो वह थोडी बहुत चिट्ठी पढ़ने सीख गये थी। जिससे वस्ती वाले बहुत प्रसंन्न हुए थे।

इसी तरह ओमप्रकाश वा ल्मीकि जी ने भी अपनी आत्मकथा में भी जातिय भेदभाव को प्रस्तुत किया है।उन्होंने बताया है कि प्राथमिक शिक्षा से ही कई तरह की मुश्किल का सामना करना पड़ा। अध्यापको से लेकर स्वर्ण जाति तक के सभी छात्र हमें घृणा की भावना से देखते थे।दलित छात्रों से काम तो लेते थे ,कितुं सहयोग की जगह प्रता ड़ना मिलती थी ,प्रश्न पूछने पर प्रोत्साहन के स्थान पर अशब्द सुनने को मिलते थे।चूहडा है तो चूहडा बनकर रहो बाह्मण मत बनो।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी अनुसार "सरकारी स्कूलों के द्वार अछूतों के लिए खुलने शुरु हो गये थे, लेकिन जनसामान्य की मानसिकता में कोई विशेष बदलाव नहीं आया था।स्कूल में दूसरों से दूर बैठना पड़ता था।अपने बैठने की जगह तक आते आते चटाई छोटी पड़ जाती थी।कभी-कभी तो एकदम पीछे दरवाजे के पीछे बैठना प ड़ता था,जहाँ से बोर्ड पर लिखे अक्षर धुँधले दिखते थे"[16]

दलित समाज में ऐसा माहौल था कि जहां स्वर्णो को उच्चता मिलती थी।स्कूल में जहां हेडमास्टर का दलितों के प्रति बुरा व्यवहार था ,वहां बच्चों और आध्यापक का कैसा व्यहार होगा।छात्रों को अपने साथियों से तो अपमानजनक बातें सुनने को मिलती ही थी।स्कूल में दलित छात्रों को अलग बैठाया जाता था।दलित छात्रों को इतनी दूर बैठाया था कि उसके लिए चाहें चटाई कम पड़ जाती थी।दलित छात्रो को पूछने पर जबाब नहीं छड़ी मिलती थी,

मतलब अध्यापक उनकी पिटाई करते थे।छात्रों को उनके नाम से जाति से पुकारा जाता था। गलती करने पर छात्रों को ऐसी सजा मिलती जैसे उन्होंने बहुत बड़ा गुनाह किया हो।

"ठीक है.....वह जो सामने शीशम का पेड़ खड़ा है, उस पर चढ़ जा और टहनियाँ तोड़ के झाड़ू बणा ले। पत्तोंवाली झाड़ू बणाना। और पूरे स्कूल कू ऐसा चमका दे जैसा सीसा। तेरा तो यो खानदानी काम है। जा..फटाफट लग जा काम पे"[17]

दलित छात्रों को इतना अपमान सहने के बाद भी स्कुल में पानी के घ ड़े को हाथ तक नहीं लगाने देते थे ,यदि कोई भूल से उसे छू लेता था तो उसे उसकी सजा मिलती थी ,स्कूल का चपरासी इतनी दुर से पानी हाथ में डालता था कि कहीं गिलास हाथ को ना छू जाएं।जहां शिक्षित होने पर भी अध्यापको की मानिसक सोच नहीं बदली थी।अध्यापक द्वारा अपमान होने पर छात्र विरोध नहीं करते थे, विरोध किए बिना ही उन्हें कई दिनों तक कक्षा में जाना नही दिया जाता ।घर के हालात ठीक ना होने पर बच्चें प्राईमरी स्कूल तक ही प ढ़ते थे।घर के जो हालात थे उनमें दाखिला लेने का तो सवाल ही नहीं उठता था।जहाँ रोटी ही नसीब न हो , वहाँ पढ़ाई की बात कोई कैसे सोच सकता है।

"घर लौकटर पिताजी को बताया तो वे आग-बबूला हो गए थे।एंव मुझे कोई भी काम करने नहीं देते थे।बस ,पढ़ाई करो।कहते थे ,पढ़-लिखकर अपनी 'सुधारो'।उन्हें पता नहीं था प ढ़ लिखकर जातियाँ नहीं सुधारतीं।वे सुधरती हैं जन्म से"[18]

दलित लोग गरीबी से तो निपटा जा सकता है ,किंतु जाति से पार पाना आसान नहीं है। गरीबी का कारण बेरोजगारी भी था ,यहां काम मिलना बहुत मुश्किल था ,गरीब लोग ब्याज

से पैसा लेते थे ,कितुं पैसा उतारते-उतारते जीवन खत्म हो जाता था।कर्जदार का जीवन भी बहुत बदतर था।जिसके कारण उच्च जाति के लोग उन्हें डरते थे ,और दुरव्यहार करके चले जाते थे।जिसके कारण दलित लोग अपने बच्चो को अशिक्षित ही रखते थे।घर के आर्थिक हालात इतने बुरे थे कि प ढ़ना तो बहुत दूर की बात रोटी भी नसीब नहीं होती थी।

समुदाय

सामुदायिक बहुत से लोगों का समूह ।किसी वर्ग जाति के लोगों द्वारा बनाई हुई ऐसी संस्था जिसका मुख्य उद्देश्य सामान्य हितों की रक्षा होता हैं एसोसियेशन। किसी भी दो या दो से अधिक व्यक्तियों के ऐसे समूह को कहते हैं जो एक-दुसरे के सम्पर्क व लेनदेन रखे , जिनमें एक-दुसरे से कुछ सामानताएँ हों और जो आपस में एकता की भावना रखें।कुछ समाजशास्त्रियों के अनुसार किसी गुट का सामाजिक समुदाय कहलाने से पहले यह जरूरी है कि उसके सदस्य अपने-आप को उस समुदाय का भाग समझें, जबकि अन्य के हिसाब से अगर उनमें समानता है और वे एक दुसरे से परस्पर रखते हैं तो वे एक सामाजिक समुदाय हैं ,चाहे वे स्वयं यह पहचाने या नहीं। दलितों पर जो अत्याचार होते थे ,वह आज भी कहीं ना कहीं मौजूद हैं।दलित लोगों की गांव से बाहर अलग बस्ती होती थी। स्वर्ण जाति वाले लोग वहां अपना काम करने के लिए आते थे,यदि कोई पशु मर जाता था तो उन्हें दलित लोग ही उठाते थे।उनके इलावा कोई नहीं उठाता था।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

डॉ. तुलसीराम जी के अनुसार" मरे हुए पशु का मांस खाने के संदर्भ में एक उल्लेखनीय तथ्य यह है कि आजादी के पूर्व हमारे क्षेत्र के सभी चमार गाय ,बैल तथा भैंस मर जाने पर उसका मांस खा जाते थे"[19]

गांव में किसी का भी गाय भैस मर जाती तो उसे दलित लोग ही उठाते थे , किसी पास के जंगल में जाकर चमड़ा उतरते थे,यह काम अक्सर महिलाएं ही करती थी,और चमड़ा उतारने के बाद टोकरी भर कर घर लेकर जाती और थोडा बेचने के बाद घर पर रख लेती और उस कच्चे मां को जमीन में दबाकर रख देती थी।जब बरसातो के दिनो में जब खाना नहीं मिलता था,तो उसे पका कर घर वालो का पेट भरती थी ,वह महिलाएं जमीन में मांस को दबाकर भंण्डार लेगा देती थी।दलित लोगों को मरे पशुओं का मांस खाना प ड़ता था।इन सब का कारण था,दलित लोगों का अशिक्षित होना ,कोई ना होने के कारण वह दुसरों से डर कर रहते थे जैसा वह कहतें वह वैसा ही करते थे।

"हकीकत तो यह है कि आज भी करोडों भारतीय मिनांदर की कसौटी पर खरा उतरते है। सदियों पुरानी इस अशिक्षा का परिणाम यह हुआ कि मूर्खता और मूर्खता के चलते अंधविश्वासों का मेरे पूर्वजों के सिर से कभी नहीं उतरा..."[20]

डॉ.तुलसीराम अपनी आतमकथा में प्रस्तुत करते हैं कि उन्होंने समाज और परिवार की विपरित परिस्थितियों का सामना किया।इन विपरत परिस्थितियों के बावजुद भी इनका होंसला नहीं टूटा और यह आगे ब ढ़ते गये।जिसके कारण इनको लोगों के तरह के ताने भी सुनने को मिले थे।दलित लोग गरीबी से तो निपट सकते थे कितुं जाति से कैसे स्वर्ण जाति के

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

जो दलितों पर कई तरह के अत्याचार करते थे।दलित लोग स्वर्ण जाति वाले लोगों से डर कर रहते थे।दलित लोगों को इस्तेमाल की वस्तु समझते थे।लोग दलितों को छुना भी पाप समझते थे,दलित लोग कितने भी सच्चे या ईमानदार होते थे,फिर भी लोग उन पर शक करते थे,दलित होने के कारण लोग उन पर विश्वास नहीं करते थे।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी अनुसार- "अस्पृश्यता का ऐसा माहौल कि कुत्ते, बिल्ली, गाय , भैंस को छुना बुरा नहीं था। लेकिन यदि चुहडे का स्पर्श हो जाएं तो पाप लग जाता था। सामाजिक स्तर पर ईमानदारी का दर्जा नहीं था ,वह सिर्फ जरुरत की वस्तु थे। काम पूरा होते ही उपयोग खत्म, इस्तेमाल करो ओर दूर फेकों"[21]

आज लोग चाहें कितने भी बदल गये हो परन्तु उनका मन नहीं बदला , वह लोगो को नहीं उनकी जाति को प्रेम करते हैं। जाति पता लगने के बाद घृणा करने लगते हैं।दलित लोगों को सम्बोधन करने का यह तरीका था ,ओ चूहडे और अबे चूहडे के इन तरीको से पुकारते थे।दलित समाज में लडकियों को स्कूल नहीं भेजते थे।दलित के बच्चों की मानसिक सोच बचपन से ही बना दी थी कि वह दलित है , दलितों पर होने वाले अत्याचार वह बचपन से ही देखते आये है।

"लेकिन मन में एक उबाल सा उठता था।जो कहना चाहता था ,मैं हिन्दु भी नहीं हुं यदि हिन्दु होता तो हिन्दु मुझसे इतनी घृणा ,इतना भेद-भाव क्यों करते? बात-बात पर जातिय-बोध ही हीनता से मुझे क्यों भरते? मन में यह भी आता था कि अच्छा इनसान बनने के लिए जरूरी क्यों है कि वह हिन्दु ही हो ...हिन्दु की क्रूरता बचपन से देखी है , सहन की है।जातिय

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

श्रेष्ठता भाव अभियान बनकर कमजोर को ही क्यों मारता है ?क्यों दलितों के प्रति हिन्दु इतना निर्मस और क्रूर है?"[22]

सदियों से चली आ रही इस प्रथा में जाति अहम हैं।जिसके लोगों प्रताड़ना का सामना करना पड़ता था,ऐसा वतावरण था कि दलित लोगों को अलग बस्तीयों में रहना प ड़ता थे,जहां से गुजरते समय सांस लेना मुश्किल हो जाता था ,और वहां दलित लोग कैसे रहते होगे।शिक्षित ना होने के कराण दलित लोग भूत प्रेतों में विश्वास रखते थे।

"मुझे उस हाल में देखकर माँ रो पडी थी। मैं सिर से पाँव तक गन्दगी से भरा हुआ था। कपडों पर खून के धब्बे साफ दिखाई पड़ रहे थे। बडी भाभी ने उस रोज माँ से कहा था "इनसे ये ना कराओ...भूखे रह लेंगे..इन्हें इस गन्दगी में ना घसीटो.."मैं इस गन्दगी से बाहर निकल आया हूँ लेकिन लोखों लोग आज भी उस घिनौनी जिन्दगी को जी रहे हैं"[23]

दलित लोग पहले भी गन्दगी भरी जिन्दगी जीते थे ,और आज भी कई लोग बैसी जिन्दगी जीने में मजबूर हैं। दलित लोगों से मरे पशु उठाने को कहना ,और उठाये हुए पशुओं की खाल उतारनी यह काम ज्यादातर औरते करती थी।तगाओं के घरों में गोबर उठाने काम भी औरते करती थी।कई बार स्कूल पढते बच्चों को भी यह कार्य करने पड़ते थे।

"वे सुनकर मजाक उड़ाने लगते थे।पिताजी ने उन सबको बहुत समझाने की कोशिश की थी , लेकिन वे उलटे पिताजी को ही समझाने लगते थे-'क्यूँ लड़के को पढ़ा-लिखाकर निकम्मा बना रहे हो! न घर का रहेगा न बाहर का। पढ़े- लिखे तो वैसे भी बेवकूफ होते हैं"[24]

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

जब बस्ती में दलितों के बच्चे स्कूल पढ़ाने जाते तो समाज में रह रहे उच्च श्रेणी के लोग उनका मजाक उठाते थे।अक्सर उनके माँ-बाप को ताने मारते क्या करोंगे इतना प ढ़ा कर रहोंगे तो चूहडा ही वह सोचते थे ज्यादा प ढ़े लिखे लोग बेवकूफ ही होते है।एक गरीब का बच्चा मजदूरी के अलावा कर भी क्या सकता हैं। डॉ.तुलसीराम जी लिखते है कि मेरे पिता जी इन सब लोगों की बातें सुनते थे ,किंतु उन बातों का कोई असर पिता जी पर नहीं होता था।वह अक्सर बोलते थे जो बोलने दो तुम बस पढ़ाई करो।

वातावरण

किसी वस्तु या व्यक्ति के आसपास की वह परिस्थिति या बात जिसका उस वस्तु या व्यक्ति के अस्तित्व जीवन निर्वाह विकास आदि पर प्रभाव प ड़ता है।किसी कलात्मक या साहित्यिक कृति के वे गुण या विशेषताएँ जो दर्शक या पाठक के मन में उस कृति के रचनाकाल,रचना आदि की कल्पना या मनोभाव उत्पन्न करती है।व्यक्ति के चारों ओर कुछ है,वह उसका वातावरण है।इसमें वे सब तत्व सम्मिलित किए जा सकते हैं जो व्यक्ति के जीवन और व्यवहार को प्रभावित करते हैं।**डगलस व हॉलैण्ड** के मतानुसार, "वातावरण शब्द का प्रयोग उन सब बाह्य शक्तियों ,प्रभावों और दशाओं का सामूहिक रुप से वर्णन करने के लिए किया जाता है ,जो जीवित प्राणियों के जीवन ,स्वभाव व्यवहार ,बुद्धि विकास और परिपक्वता पर प्रभाव डालते है"[25]

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

उस समय चारों ओर ऐसा वातावरण था ,कि लोग पूरी तरह अंधविश्वासों में डूबे हुए थे। लोग भूत प्रेतो में विश्वास रखते थे।यदि कोई बीमार हो जाता तो उसे डाक्टर के पास नहीं लेकर जाते बल्कि चेलों के पास लेकर जाते थे।जहां तक की कौआ चोच मारे तो उसे भी अपशकुनी समझते और चोच मारने को मुत्य का सकेत मानते थे।यदि लोगों रोते थे तो उनका मानना होता था कि अब मुत्यु नहीं होगी।ऐसे वातावरण में डॉ. तुलसीराम का परिवेश हुआ।

डॉ.तुलसीराम जी के अनुसार"घर में ओझाओं का बोलबाला हो गया। किसी को सिरदर्द होते ही ओझैती-सोखैती शुरु हो जाती थी।ऐसे भुतहे वातावरण मे किसी शिशु का जन्म आजमगढ़ जिले के धरमपुर नामक गांव में 1 जुलाई , 1949 को हुआ हो तो उसकी विरासत कैसी होगी?[26]

लोग अंधविश्वासों में इतने घिरे हुए थे कि उन्हें सही और गलत का अनुमान लगाना मुश्किल था।किसी को भी वह अशुभ समझाने लगते, देवी देवतों को खुश करने के लिए बच्चों कि बलि देते थे।लोग भूत प्रेतों पर और जादू टोनो पर ही विश्वास कर्ते थे ,इसी को अपनी श्रद्वा मानते थे।

"भारत के अंधविश्वासी समाज में ऐसे व्यक्ति 'अशुभ' की श्रेणी में हमेशा के लिए सूचीबद्व हो जाते हैं।ऐसी श्रेणी में मेरा भी प्रवेश मात्र तीन साल की अवस्था में हो गया।अत :घर से लेकर बाहर तक सबके लिए मैं 'अपशकुन' बन गया"[27]

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

लोगों में अंधविश्वास था कि वह कोआ को तो अपशकुन मानते ही थे ,जिसके साथ साथ उन लोगों को भी जो सुंदर नहीं होते थे ,उनको भी अपशकुन मानते थे ,जिसके कारण सारे लोग उससे घृणा करते थे।यह अपशकुन लोगों का परिवार से शुरू हो जाता उसकी बाद सारे गांव वाले उसे अपशकुन मानने लगते थे।

"वैसे सच्चाई तो यह थी कि हमारे गांव में निर्वंश जंगू पांडे ,विधवा पंडिताइन,पोखरे वाला उल्लू,खो खो करने वाली मरखउकी चिडिया और मैं स्वयं ,हम पांचों असली अपशकुन थे जिन्हें देख-सुनकर लोगों की रूह कांप जाती थी"[28]

दलित लोगों से उच्च श्रेणी वाले लोग घृणा करते ही थे किंतु दलित लोग आपस में ही एक दूसरे से ही घृणा करते थे ,एक दूसरे को अपशकुन समझते थे।गांव में दो तीन लोगों को अपशकुन माना जाता था,उनको देखकर लोग रास्ता बदल लेते थे।सामने मिल जाने पर लोग गाली देते थे ,गांव में कोई इन लोगों को पंसद नहीं करता था।इसी तरह डॉ.तुलसीराम भी अपने आप को अपशकुन मानने लगे थे।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी "इसी जगह गाँव भर के लड़ाई- झगडे गोलमेज कांफ्रेंस की शक्ल में चर्चित होते थे।चारों तरफ गन्दगी भरी होती थी।ऐसी दुर्गन्ध कि मिनट भर में साँस घुट जाए।तंग गलियों में घूमते सूअर ,नंग-धडंग बच्चे ,कुत्ते,रोजमर्रा के झगडे-बस ,यह था वह वातावरण जिसमें बचपन बीता"[29]

दलित लोगों के वहां मकान थे जहां गावं भर की औरते ,बड़ी बूढ़ो, सब खुले में ही शोचालय जाती थी,रात को नहीं मे नही दिन के उजाले में बैठ जाती थी ,त्यागी महिलाएं भी यहीं पर

आती थी।चारों ओर गंदगी भरी रहती थी।दलित लोगों को हर तरफ से अपमान ही झेलना पड़ता है। जिन्होंने कभी अपमान झेला नहीं उसे इसका क्या एहसास कैसे होगा।साँस लेने पर दम घुटता था, लोग सूअरों को अपने घरों में पालते थे ताकि जब लोग सूअरो की बलि देते थे तो उनके सुअर बिक जाएं।सूअर को कमाई का एक जरिया मानते थे।लोगों पर कोई भी आकर अपना अधिकार जमाने लगता था ,लोगों को खेतों में काम करने लिए जबदस्ती लेकर जाते थे,मना करने पर उन्हें पीटते थे।लोग चुपचाप देखते रहते थे ,कोई विरोध के लिए खड़ा नही होता था।

"बस्ती के किसी व्यक्ति में इतनी हिम्मत नहीं थी,जो दरोगा से पूछ सकता कि उन्हें पीटा क्यों जा रहा है?क्या कुसूर है उनका?यह तमाशा घंटे भर चला था ,दस के दस लोग दर्द से कराह रहे थे,उनकी चीखें सुनकर वृक्षों पर बैठे पक्षी उड़ गए थे।लेकिन गाँव की संवेदना को लकवा मार गया था।मेरे मन में गहरी वितृष्णा भर गई थी।वय:सन्धि की उस किशोरावस्था में मन पर एक खरोंच पड़ गई थी जो काँच पर खिंची लकीर की तरह आज भी यथावत् है"[30]

दलित लोगों को उनके श्रम का पैसा तक नहीं मिलता था ,यदि वह अपने श्रम का पैसा मांग भी लेते थे ,तो उन्हें पीटा क्यों जाता था।बस्ती के लोग दरोगों से बचने के लिए इधर उधर भागते थे।वह इतनी बुरी तरह पीटते थे,कि देखने वालों की रुह कांपने लगती थी।ना चाहकर भी लोग उन्हें रोक नहीं पाते थे ,ना किसी की इतनी हिम्मत होती थी कि उन्हें पूछ सकें क्या गलती की है और क्यों पीट रहे हो,चुपचाप पीट रहे है।ऐसा ही हाल स्कूल के छात्रों का होता था, उन्हें भी अध्यापक बिना कारण और बिना गलती के पीट देते थे।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

"ऐसे ही आदर्श शिक्षको से पाला पड़ा था उस समय,बचपन से किशोर अवस्था की ओर बढ़ते हुए,जब व्यक्तित्व का निर्माण हो रहा होता है,तब ऐसे दहशत भरे माहौल में जीना पड़ा। इस पीड़ा का एहसास उन्हें कैसे होगा जिन्होंने घृणा और द्वेष की बारीक सुइयों का दर्द अपनी त्वचा पर कभी महसूस नहीं किया ?अपमान जिन्हें भोगना नहीं पडा ?वे अपमान-बोध को कैसे जान पाएँगे ? रेतीले ढूह की तरह सपनों के बिखर जाने की आवाज नहीं होती।भीतर तक हिला देनेवाली सर्द लकीर खिंच जाती है जिस्म के आर-पार कभी-कभी लगता है जैसे क्रुर और आदिम सभ्यता में साँस लेकर पले -बढ़े हैं"[31]

दलित लोगों के साथ-साथ दलित छात्रों को भी स्कूल में बहुत कुछ सहना प ड़ता था। अध्यापक और लोग उन पर बहुत अत्याचार करते थे,दलित छात्र जब से स्कूल जाने लगे तब से अध्यापक उन्हें घृणा की भावना से देखते थे।बचपन से लेकर किशोर व्यवस्था तक पहुंचते-पहुंचते उन्होंने यह सब झेला हैं।छात्रों को चारों ओर से द्वेष और घृणा ही उन्हें मिलती थी।लोग एक दुसरे को मनुष्य नहीं मानने की बजाय उसकी जाति को ही सब कुछ मानते थे।स्कूल में प ढ़ रहे छात्रों को भी यह सब झेलना प ड़ा जाति को लेकर छात्रों को भी बहुत सारे अत्याचार का सामना करना पड़ा।

"बृजपाल सिंह के भाई ने बुजुर्ग को शान्त करने की कोशिश की।बुजुर्ग उसे भी गालियाँ बक रहा था।अतिथि-सत्कार का खोखलापन खुल गया था।अतिथि की जाति ही उसे आदर दिलाती है।वैसे भी आदर पाने का हमें अधिकार ही कहाँ था।मेरी आशंकाएँ सच हो गई थी।किसी तरह हम लोग उनके चंगुल से बच गए थे"[32]पृ

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

ऐसा समय जहां चारों जाति पाति ऊँच नीच का भेदभाव पूरे समाज में फैला हुआ था। और दलितों के सभी लोग दुर्व्यहार करते थे ,और दलितों को सिर्फ काम करने वाले ही मानते थे , यदि दलित हिंदु है तो फिर हिंदु जाति के दलितों से घृणा को करते।हिंदु लोग ना दलितों को अपने मन्दिरों में प्रवेश होने देते थे।और यदि कई परिवेश कर जाता तो उ से सजा देते थे। दलितों के अलग देवी देवते थे।वह उनकी पूजा करते थे।दलितों पर बहुत अत्याचार करते थे।

संक्षिप्त रूप से कहा जा सकता है कि दलितों को अपने अधिकारों के लिए भी ल ड़ना पड़ रहा है। इसका कारण सवर्णों का दलितों से घृणा करना ।जिसके लिए उन्हें आज भी अपने भविष्य में समाधान होता नजर नहीं आ रहा। दलितों की अमानवीय समस्याओं पर कथा- साहित्य में कम लिखा गया है जबकि अस्पृश्पता , पर अधिक लिखा गया है।दलितों की समस्या के साथ और भी कई अन्य समस्या जुडी हुई है जैसे बच्चों की शिक्षा , सफाई स्वास्थ्य और मनोरंजन आदि।इन सब से घर का वातावरण बनता है। ऐसे हालात में सरकारी स्कूलों में पढ़ने और मेहनत मजूरी कर के ब ड़े हुए हैं दलितों के बच्चे , आगे हाई स्कूल में प ढ़ने के लिए उनके पास पैसे नहीं होते थे।दलित लोग आज भी समाज में सामान चाहते है। वह प ढ़ना चाहते है। समाज में लोग उनसे निम्न कार्य कराते है।दलितों पर अत्याचार आज भी कहीं ना कहीं मौजूद हैं।सारे लोग अंधविश्वासों में डूबे थे,वह भूतों-प्रेतो पर अधिक विश्वास करते थे।

संन्दर्भ सूची

1. दलित साहित्य: ,सामाजिक संदर्भ, ओमप्रकाश वाल्मीकि न्यायचक्र अंक 6,15

2.मोहनदास नैमिशराय-,साहित्य और संस्कृति में दलित अस्मिता और पहचान का सवाल , पृ 104-5

3. तुलसीराम, मुर्दहिया आत्मकथा, प्रकाशन राजकमल नई दिल्ली पृ13

4.वही पृ13

5.वही पृ14

6.वही पृ34

7. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन आत्मकथा,प्रकाशन राधाकृष्ण नई दिल्ली पृ11

8. वही पृ23

9. वही पृ46

10.जे एस वालिया ,शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार , अहम् पाल पब्लिशर्ज जालन्धर पृ4

11.तुलसीराम , मुर्दहिया, आत्मकथा पृ21

12.वही पृ23

13. वही पृ26

14. वही पृ25

15. वही पृ35

16.ओमप्रकाश वाल्मीकि , जूठन, आत्मकथा पृ 12

17. वही पृ14

18. वही पृ74

19. तुलसीराम ,मुर्दहिया, आत्मकथा पृ15

20. वही पृ9

21.ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन, आत्मकथा पृ12

22. वही पृ54

23.वही पृ48

24. वही पृ 75

25.रिन्कू कुमार वर्मा , बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र , अरिहन्त पब्लिकेशन(इण्डिया) लिमिटेड दिल्ली,पृ 29

26. तुलसीराम , मुर्दहिया, आत्मकथा पृ10

27. वही पृ12

28. वही पृ 49

29. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन, आत्मकथा पृ11

30. वही पृ52

31.वही पृ63

32. वही पृ 67

तृतीय अध्याय

'मुर्दहिया' और 'जूठन' आत्मकथाओं में धार्मिक पक्ष

धर्म शब्द की व्यत्यत्ति' धृ' धातु से मन प्रत्यय लगाने पर हुई है। ' धृ' धातु का अर्थ है-धारण करना।धर्म शब्द सुनते ही यह सहज अनुमान हो जाता है कि कुछ लोगों का एक समूह जो एक नियम का पालन करता है।यह सामूहिक रूप से मान्य विश्वासों एवं आचराणों की प्रणाली है।किसी भी वस्तु के स्वाभाविक गुणों को उसका धर्म कहते है।जैसे अग्नि का धर्म उसकी गर्मी और तेज है।गर्मी और तेज के बिना अग्नि की कोई सत्ता नहीं।मनुष्य का स्वाभाविक गुण मानवता है।यही उसका धर्म है।आधुनिक युग में संसार का कोई ऐसा देश

नहीं है।जिसमें एक ही धर्म के लोग रहते है। इस प्रकार व्यापक अर्थ के अनुसार मानवीय जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित करना तथा प्रत्येक आत्मा से और अन्त में आत्मा को परमात्मा से सम्बंधित कर देना सच्चा धर्म है।दलित समाज में दलित लोगों के अलग देवी-देवते होते थे,उन्हें स्वर्ण जाति वाले लोग नहीं मानते थे,दलित लोग अपने देवतो को खुश को करने के बलि देते थे।

धर्म के संदर्भ में यिंगर ने कहा है-"धर्म एक सामूहिक प्रक्रिया है,क्योंकि यह सामाजिक जीवन के ताने-बाने में छाया हुआ है"[1]

बाबा साहब ने मनुस्मृति को उद्धृत करते हुए- "संसार की समृद्धि के लिए ईश्वर ने ब्राह्मण को अपने मुख से ,क्षत्रिय को भुजाओं से ,वैश्य को जंघाओं से और शुद्र को पैरों से पैदा किया है"[2]

सिलियरमेकर ने कहा-"Religion is a feeling of absolute dependence" यहाँ केवल भावना पर ही जोर दिया गया है तथा अन्य पहलुओं की अवहेलना की गई है।"[3]

अंधविश्वास

प्राचीन मनुष्य अनेक क्रियाओ और घटनाओं के कारणों को नहीं जान पाता था। प्राचीन ज्यों-ज्यों मनुष्य का काम का विस्तार हुआ त्यों त्यों अंधविश्वास का जाल भी फैलता गया और इनके कई भेद प्रभेद हो गए। अंधविश्वास सार्वदेशिक और अस्थायी है।अंधविश्वासों का सर्वसम्मत वर्गीकरण संभव नहीं है।इनका नामकरण भी कठिन है।पृथ्वी शेषनाग पर स्थिति है, वर्षा, गर्जन और बिजली इंद्र की क्रियाएँ है , भूकंप की अधिष्ठात्री एक देवी है रोगों के

कारण प्रेत और पिशाच है ,इस प्रकार के अंधविश्वासों को धार्मिक अंधविश्वास कहा जा सकता है।अंधविश्वासों का दूसरा बड़ा वर्ग है मंत्र- तंत्र।जादू टोना शकुन , मुहूर्त मणि ताबीज आदि अंधविश्वास की संपत्ति है।इसी तरह दलित समाज में भी अंधविश्वासों का बोलबाला था।लोगों में अंधविश्वास कूट कूट कर भरा था ,देवतो को खुश करने के बच्चों की बलि दे देते थे,वह बीमार होने पर ईलाज नहीं करते थे किसी साधु चेले को बुलाकर उससे इलाज कराते थे। मार्क्सवादी दृष्टिकोण में अंधविश्वास वह विचार पद्धति है जिसे आमतौर पर धर्मशास्त्रीय तथा बुर्जुआ साहित्य में सच्ची आस्था के मुकाबले रखा जाता है जो आदिम जादू से जुड़ा होता है। किसी भी धर्म के अनुयायी के दृष्टिकोण से अन्य धर्मों के सिद्वांत तथा अनुष्ठान अंधिश्वास की श्रेणी में आते हैं। मार्क्सवादी निरीश्वरवाद धार्मिक आस्था तथा किसी भी तरह के अंधविश्वास को पूर्णत:अस्वीकार किया है।

डॉ.तुलसीराम जी भी अपनी आत्मकथा में भी अंधविश्वास के बारे में लिखते है "उस समय गांव में दलितों के अलग देवी-देवता होते थे ,जिनकी पूजा सवर्ण नहीं करते थे। हमारे गांव में भी 'चमरिया माई' और 'डीह बाबा' दो ऐसे ही देवी-देवता थे , जिनकी पूजा दलित करते थे।इन दोनों को सूअर तथा बकरे की बलि दी जाती थी"[4]

दलितों के अलग देवी-देवते होते थे। जिनकी पूजा स्वर्ण जाति वाले लोग नहीं करते थे। दलित अपने देवतों को खुश करने के लिए सूअर, बकरे की बलि देते थे। दलित लोग चमरिया माई और डीह बाबा को मानते थे। इन देवतो को सूअर औए शराब चढाते थे। इन्हें खुश करने के लिए कई तरीको से पूजा होती थी। लोग मानते थे ऐसा करने से सभी इच्छा पूरी होगी। कोई भी कार्य हो पहले वह अपने देवी देवतो को मानते थे।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

"चेचक निकलने पर मनौती के अनुसार देवी 'शीतला माई' की भी पूजा की जाती थी। शीतला माई का मंदिर गांव से करीब बीस किलोमीटर पश्चिमोत्तर में निजामाबाद कस्बे के पास था।वहां साल में एक बार गांव के सारे दलित मिलकर जाते और शीलता माई को सूअर के बच्चे की बलि के अलावा 'हलवा- सोहरी' भी चढ़ाई जाती थी।शीतला माई को अति प्रसन्न रखने के लिए मंदिर में वेश्याओं का नृत्य भी कराया जाता था।ऐसी नृत्यांगनाएं मंदिर के पास बड़ी आसानी से मिल जाती थी"5

चेचक एक भयानक बीमारी हैं यदि किसी व्यक्ति को चेचक रोग हो जाता था तो उससे पूरे शरीर में धाग पड़ जाते थे,जोकि वह धाग पूरी जिन्दगी नहीं जाते थे।कई बार आंखों तक की रोशनी चली जाती थी।दलित लोगों का मानना था कि यदि यदि शीतला माई की पूजा करेंगे तो चेचक का रोग नही होगा।वह देवी को अपनी मनौती के अनुसार देवी को हलवा आदि का प्रसाद चढ़ाते थे।उनका मानना था कि यदि देवी की पूजा नहीं करेंगे तो चेचक का रोग हो जाएगा।देवी को प्रसन्न करने के लिए नृत्य भी कराया जाता था।नृत्य करने वाले मन्दिर के बाहर ही मिल जाते थे। थे।तुलसीराम को भी चेचक का रोग होंने पर शीतला माई के मन्दिर जाकर प्रसाद चढ्वा था।

"इस मामले में गांव के कौए पार्ट टाइम अपशकुन थे।जब कभी कोई उ ड़ता हुआ कौआ किसी को पैरों या चोंच से मार देता था ,तो इसे भी अपशुकन माना जाता।यह अपशकुन इतना खतरनाक माना जाता था कि तुरंत घर के किसी व्यक्ति को सबसे नजदीकी रिश्तेदार औरतों का तत्काल रोना शुरू हो जाता , लेकिन शीघ्र ही उन्हें बता दिया जाता कि मृत्यु नहीं ,बल्कि कौए ने चोच मारी है।इस विधि से कौए का अपशकुन दूर किया जाता था"6

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

दलित लोग पूरी तरह अंधविश्वासों में डूबे हुए थे।पक्षी से लेकर व्यक्ति तक को लेकर वह अंधविश्वास में डूबे थे ,वह लोग मानते थे कि यदि कौए चोंच मार जाएं तो मृत्य का संकेत माना जाता था।उसके बाद रिश्तेदार के घर यह संदेश भेजा जाता था ,ताकि वह लोग रोना शुरू करें उनके रोने के बाद यह बताया जाता था ,कि कौए ने चोच मारी थी ,मृत्य टल गई । दूसरी और वह लोग कौए को स्थाथी रूप से कौए को अपशकुन नहीं मानते उनका विश्वास था कि कौए के कांव-कांव करने से किसी रिश्तेदार के आने का संकेत होता था।

"मुर्दहिया के संदर्भ में सन् 1957 का 'भादों' का महीना मेरे जीवन का एक विशेष यादगार वाला महीना है।उस समय हिन्दु धर्म के अनुसार खरवांस यानी बहुत अपशकुन वाला महीना था।इस बीच मेरे पिता जी जिस सुदेस्सर नामक ब्राह्मण की हरवाही करते थे ,उनकी बुढिया मां मर गई।उनके ही पट्टीदार अमिका पांडे ने 'पतरा' देखकर बताया कि अभी पंद्रह दिन खरवांस है,इसलिए मृत मां का दाह-संस्कार नहीं हो सकता।यदि ऐसा किया गया तो माता जी नरक भोगेंगी"[7]

उस समय लोग महीनों को भी लेकर अंधविश्वास में डूबे रहते थे ,भादों महीना अर्थात् नंबम्बर का महीना लोग इसको अपशकुन वाला महीना मानते थे।यदि किसी की मृत्य इस महीने में हो जाती थी तो लोग उसका संस्कार तक नहीं करते थे ,उनका मानना था संस्कार करने पर लोग नरक को जायेगे।इसी वह उतने दिन लाश को किसी एक जगह रख देते थे , और शुभ महीना आने पर संस्कार कर देते थे।लोग जादू टोने को बहुत मानते थे।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

"गांव में सबका विश्वास था कि दिया-बाती जलाकर रतौन्ही ढूंढते हुए किसी के द्वारा टोक दिए जाने से यह टोटका सफल हो जाता है और फिर रोगी को साफ दिखाई देने लगता है।मेरे मां भी दावा करने लगी कि इसी टोटके से वह ठीक हो गई।मुझे ऐसे टोटकों के प्रति आशंका तो होती थी, किन्तु घोर अंधविश्वासी माहौल में कोई प्रतिरोध नहीं पाता था"[8]

रतौन्ही एक आंख की बीमारी होती थी जिसके चलते रात में दिखाई देना कम हो जाता था।वह मानते थे कि टोटका करने पर यह रोग ठीक हो जाएगा। इसी तरह सभी लोग देखो-देखी में यह सब करते थे।तुलसीराम जी के घर में भी इस टोटको को बहुत मानते थे ,और वह इस रोग को ठीक करने के लिए यह सब करते थे। डॉ.तुलसीराम ना चाहकर भी इस बात का विरोध नहीं कर पाते थे।कई बार लोग सोने-चांदी के चक्कर में बच्चों तक की बलि दे देते थे।

"ऐसी हडियों में कभी-कभी सोने-चांदी के गहने भी मिला करते थे। ऐसे ही छिपे हुए खजानों की तलाश के लिए गांवों में उस समय रहने वाले ओझा और तांत्रिकों के चक्कर में कई व्यक्ति अपने बच्चों बलि तक चढ़ा देते थे"[9]

सिरदर्द होने पर भी भगत सिंह चेलों को बुलाया जाता था।व्यक्ति कितना भी क्यों ना बीमार हो उसे डाक्टर के पास नहीं लेकर जाते थे।तांत्रिको को बुलाकर इलाज कराया जाता। दलित लोग मानते थे विक्टौरिया के सिक्के जमीन में उनको पूर्वेजनो ने दबा कर रखे है।इसलिए वह तांत्रियों के च्वक्र में फंसे थे जिसके लिए वह अपने बच्चे तक की दें बलि देते थे। उन्हें ऐसा लगता था कि ऐसा करने पर उनको सिक्के मिल जाएगे।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी के अनुसार "अक्सर किसी भूत के प्रभाव का जिक्र करके भगत भूत पकड़ने की क्रियाएँ करता था जिसके बदले में देवी-देवताओं पर सूअर ,मुर्गा,बकरे और शराब

चढ़ाई जाती थी।प्रत्येक घर में उन देवताओं की पूजा होती थी।ये देवता हिन्दु देवी- देवताओं से अलग होते हैं”[10]

भूत प्रेत की छायाओं के प्रति पूरी बस्ती में अजीब माहौल था ,जरा भी किसी की तबीयत खराब होती तो डाक्टर के बजाय किसी भगत को बुलाया जाता था।भगत के शरीर में देवी देवता प्रकट हो जाने पर बीमार को दिखाया जाता था।उसके बाद लोग जोर जोर से गाने गाते थे ओर भगत द्वारा ठीक होने पर भगत जो मानते थे उन्हें वहीं भेट करते दलित लोग किसी त्यौहार आने पर देवी-देवतों की पूजा नही करते थे ,जैसे जन्माष्ट्मी आने पर कृष्ण पूजा की बजाय पौण की पूजा की जाती थी।

"कहने को तो बस्ती के सभी लोग हिन्दू थे,लेकिन किसी हिन्दु देवी-देवता की पूजा नहीं करते थे।जन्माष्टमी पर कृष्ण की नहीं ,जहारपीर की पूजा होती थी या फिर 'पौन' पूजे जाते थे।वे भी अष्टमी को नहीं , 'नवमी ' के ब्रह्ममुहूर्त में"[11]

गांव में जब भी कोई बीमार हो जाता तो उसे ठीक करने के लिए जो भगत आते थे वह र्रत को आते थे।भगत बीमार व्यक्ति को छूकर ही बीमारी के बारे में बता देता था। और सारी रात ढोलक बजाकर गाने गाये जाते थे , और जब भगत को पौन आती थी उसके बाद मरीज का इलाज करता था। सभी लोग पौन को बहुत मानते थे। और घर पर पौन की ही पूजा करते थे।जिससे पौण बाबा खुश हो जाएं ।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

"बस्ती में जब भी कोई बीमार पड जाता ,दवा-दारू करने के बजाय भूत-प्रेत की छाया से छुटकारा पाने के कार्य ,झाड़-फूँक,टोने-टोटके,ताबीज,गंडे,भभूत आदि की आजमाइश शुरू हो जाती थी"[12]

गांव में यदि कोई बीमार पड़ जाता था तो उसे डाक्टर के पास नहीं लेकर जाते थे,घर पर ही किसी बाबा को बुलाकर उसके भुत निकाले जाते थे।चाहें भूत निकालते समय व्यक्ति मर क्यों ना जाएं।बीमार व्यक्ति का इलाज घर पर ही चलता था।जो बाबा घर पर इलाज करने आते थे,तो यदि लोगों में भूत निकल जाता था तो पूरे गांव में जशन जैसा महौल बन जाता था , पूरे गांव को खाने के लिए भुलाया जाता था।

"हर साल बस्ती में एक-दो मौतें इसी तरह हो जाती थीं।फिर भी इन देवताओं और भगतों के प्रति आस्था कम नहीं होती थी।पूजा के लिए मारा गया सूअर और शराब किसी उत्सव से कम नहीं होता था।दो घूँट गले से उतरते ही आदमी हवा में उडता था।वह शराब अक्सर कच्ची ही होती थी जो घरों में ही तैयार हो जाती थी।कभी-कभार छपार या पुरकाजी के ठेके से भी देसी बोतल मँगा लेते थे।ऐसी थी जिन्दगी"[13]

दलित बस्ती में हर साल लोग देवी-देवतों की पूजा पूरे श्रध्दा के साथ करते थे।देवी-देवतों को खुश करने के लिए सुअर की बलि दी जाती थी।त्यौहरों में माहौल किसी उत्सव से कम नहीं होता था।लोग सारा दिन शराब पीकर एक दूसरों को गाली गलोच करते थे।कभी कभार महौल मार पीट तक पहुंच जाता था ,और त्यौहरों में जब किसी जानवर की बलि दी जाती थी तो बड़े अधिकारी भी मौजूद रहते थे।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

"धार्मिक अनुष्ठान के नाम पर तथा अपनी मनौतियाँ पूर्ण करने की अभिलाषा में आयोजित परम्परागत मेले में जिला प्रशासन की ओर से जिला अधिकारी ,विधायक,जनप्रतिनिधि,बड़े-बड़े अधिकारी उपस्थित होते हैं,उनकी मौजदगी में भैंसों,भेडों की बलि दी जाती है"[14]पृ

पशु बलि मेला हर बर्ष लगता था ,यह मेला शहर के अलग-अलग स्थानों पर लगता था।इस मेले में ब ड़े अधिकारी मौजूद रहते थे।मेले में शुअर ,भैंसों की बलि दी जाती थी।शराब की बिक्री भी होती थी,जिसे पीकर लोग खूब लड़ते झड़ते थे।मेले में शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए सुरक्षा कर्मीचारी तैनात किए जाते थे।इस मेले में दलित लोगों की बहुत कमाई होती थी,इसके कारण इस मेले का इन्तजार सभी रहता था।

परम्परागत रूढियाँ

दलित समाज में कई तरह की परम्परागत रुढियाँ का रिवाज था।वह किसी को भी सजा दे सकते थे,किसी को भी माफ कर सकते थे।शादी के बाद दुल्हे को ससुराल वाले सारे गांव में गुमाते उच्च जाति वाले लोगों को सलाम देने के लिए वह लोग कई तरह की बातें सुनाते थे ,और लोग अंधविश्वास में रहकर जीवन व्यतीत करते थे।सदियों से चल रही परम्परा को वह तो ड़ते नहीं थे।सारा गांव एक जुट होकर रहता था ,मुखिया के आदेश अनुसार चलते थे।मुखिया का आदेश सबको मानना प ड़ता था ,ना मानने वालो को सजा मिलती थी।

डाँ तुलसीराम जी के अनुसार" गांव में जब भी सूअर की बलि या विना बलि वाला सूअर मारा जाता,यह एक किलो की पूंछ चौधरी के नाम पर हमारे परिवार को मुफ्त मिलती थी।

बाकी मांस आवश्यकतानुसार हर परिवार पैसे से खरीदता था।सूअर की पूंछ चौधरी चाचा की बारह गांवों में विशिष्ट प्रतिष्ठा और उनकी न्यायायिक भूमिका की मान्यता का प्रतीक थी।यह परम्परा चौधरी चाचा के जीवपर्यन्त जारी रही"[15]

मरे पशुओं को दलित उठाते थे ,उसके बाद सुअर के मांस का एक टूकडा गांव के मुखिया को दिया जाता था,उसके बाद जो बचता उसे लोग बेच देते थे, आजादी के बाद यह सब खत्म हो गया था।पशु की खाल उतारने का काम ज्यादातर महिलाएं करती थी।गांव में कोई भी गलत कार्य करता था तो उसे मुखिया द्वारा सजा मिलती थी ,यदि कोई लडकी शादी से पहले गर्भवती हो जाये तो उसके साथ साथ उसके परिवार को भी गांव से बाहर निकाल दिया जाता था।गांव वाले उसे और उसके परिवार कुजाति घोषित कर देते थे।

"जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि यौन संबंध तथा डांगर खाने के मामले पंचायत द्वारा बड़े विचित्र ढंग से सुलाझाए जाते थे।यौन संबंध से जु ड़ो युवती के पूरे परिवार को कुजाति घोषित कर दिया जाता था।कुजाति घोषित होने के बाद वह आदमी अपमानित होकर वहां से अपने घर वापस लौट जाता था"[16]

दलित समाज में रूढियां प्राचीन काल से चली आ रही है ,लोग देवतो को खुश करने के लिए बलि देते थे ,और बीमारी को ठीक करने के लिए तांत्रिको को बुला जाता था।पशु मरने पर दलितों को बुलाया जाता था ,और दलित लोगों में सबसे ज्यादा पंचायती राज को माना जाता था,लोगों के निर्णय पंचायत लेती थी।जब कोई गांव में ल ड़की ऐसा गलत कार्य करती थी। तो उसे और उसके घरवालों को गांव से बाहर निकाल दिया था।उसे कुजाति घोषित कर दिया जाता था।सारा गांव उसे अपमानित करता उसके बाद वह घर चला जाता था।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी अनुसार " लेकिन किसी भी ऐसे परिवार में चले जाइए जिनका सम्बन्ध इस बिरादरी से है ,वहाँ इन देवी- देवताओं की पूजा देखने को मिलेगी।जन्म हो या कोई शुभ कार्य,शादी विवाह या मृत्यु-भोज इन देवतओं की पूजा बिना अधूरा है"[17]

दलित लोग हमेशा स्वर्ण जाति वाले लोगों से डरते थे।कोई भी कार्य करने से पहले उनकी इजाजत लेनी पड़ती थी।लड़की की शादी होने पर घर-घर जाकर उसके लिए मांग कर लाते थे,जिससे कि वह अच्छे से शादी कर सकें।

"उनके साथ हिरम सिंह को सलाम के लिए उन घरों में जाता था ,जहाँ उसकी सास काम करती थी।मैंने हिरम सिंह को सलाम के लिए जाने से रोकने की कोशिश की थी,लेकिन उसने कोई विरोध नहीं किया था और चुपचाप उनके साथ जने के लिए ख ड़ा हो गया था।मैंने कहा तुम जाओ ,मैं नहीं जाऊँगा"[18]

दलित समाज में शादी होने के बाद ल ड़का और ल ड़की दोनों लोगों के घर घर जाते थे। दलित लोग उच्च श्रेणी के लोगों के घर जाते और उनसे मांगते थे।और उनका आर्शीवाद पाने के लिए यह करते थे ,जिसके कारण उन्हें बहुत अपमानित होना प ड़ता था।धूप हो या सर्दी पैदल ही सारे गांव में घुमना पड़ता था।रास्ते में कोई पानी तक नहीं पिलाता था।

"मैंने पिताजी के सवाल का उत्तर देने के बजाय ,एक सवाल तेजी से दागा,"ये सलाम के लिए जाना क्या ठीक है ?"पिताजी ने मेरे ओर ऐसे घूरा जैसे मुझे पहली बार देख रहे हों।उन्हें चुपचाप देखकर मेरे मन की उथल-पुथल बाहर आने लगी ,अपनी ही शादी में दूल्हा घर-घर

घूमे बुरी बात है..बड़ो जातवालों के दूल्हे तो ऐसे कहीं नहीं जाते..ये दुल्हन बरला जाकर ऐसे ही घर-घर जाएगी सलाम करने..पिताजी खामोशी से मेरी बात सुन रहे थे,मुंशी जी,बस,तुझे स्कूल भेजना सफल हो गिया है..म्हारी समझ में बी आ गिया है..ईब इस रीत कू तोडेगे"[19]

दलित समाज में एक ऐसी परंपरा थी जिसे कोई नहीं तोडता था ,जब तुलसीराम गांव में किसी दोस्त की शादी में गया वह जहां जाकर उसे और उसके दोस्त को घर घर घुमने के लिए बोला गया।दूल्हे को उच्च जाति वाले लोगों के घर सलाम करने लिए लेकर जाते थे , सारी धूप में पूरा गांव घूमना होता था ना कोई अच्छे से बात करता और ना लोग पानी पीलाते थे, पानी मांगने पर अपमानित बातें सुनने को मिलती थी।जब यह बात तुलसीराम ने अपने पिता के सामने रखी तो उन्होंने बोला तेरा स्कूल जाना सफल हुआ तेरे कि यह समझ आ गई की सलाम में जाना जरूरी नहीं है।सदियों से चली आ रही परंपरा को कोई तोड़ तो रहा है।

"सदियों से चली आ रही इस प्रथा के पाशर्व में जातीय अहम की पराकाष्ठा है।समाज में जो गहरी खाई है उसे प्रथा और गहरा बनाती है। एक साजिश है हीनता के भँवर में फँसा देने की"[20]

दलित समाज में शादी के बाद दूल्हे के साथ-साथ दूल्हन को भी अपमानित होना प ड़ता था।गरीब परिवार की अनप ढ़ लडकी अजनबियों के बीच आकर वैसे ही गूँगी बनी रहती है।ऊपर से उसे दरवाजे-दरवाजे लेकर घूमने पर रही- सही कसर भी पूरी हो जाती है।दलित लोग जिन देवी-देवतों को मानते थे ना तो उनका वर्णन ग्रन्थों में मिलता है ना तो किसी पुराणों में,दलितों के अलग ही देवी-देवते थे।"वैसे भी बस्ती में ही नहीं ,पूरे वाल्मीकि समाज

में हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा नहीं होती है।प ढ़े-लिखे लोगों में देखा-देखी कर लेने की बात और है।ये पूजा करते हैं ,अपने देवी-देवताओं की जिनके नाम न तो वैदिक ग्रन्थों में मिलेंगे ,न पुराणों में।पूजा की विधियाँ भी अलग हैं"। [21] वाल्मीकि समाज में हिन्दू देवी-देवतो की पूजा नहीं होती थी ,उसके बावजूद भी तुलसीराम को गीता का ज्ञान था।वह इन सब पुस्तक को पढ़ चुके थे,और अपने घर पर सभी को गीता में जो उपदेश कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया वह अपने पिता को सुनाया चुके थे ,जिससे उनके पिता बहुत प्रसंन्न हुए और बोले मेरा तो जन्म ही सुधर गया।वाल्मीकि समाज में देवतों की अलग से पूजा की जाती थी।जिसका संबंध अन्य जाति से नहीं होता था।

संक्षिप्त रूप में कह सकते है कि दलितों के अलग देवी- देवते है वह इनकी अलग से पूजा करते है,दलित लोग देवी देवतों को मानने के बजाय भूत प्रेतो को अधिक मानते थे।उन्हें खुश रखने के लिए बलि दी जाती थी ,कई बार उनको खुश करने के लिए बच्चों तक की बलि देते थे।दलित लोगों को अपमानजनक बातों से संबोधन किया जाता था।दलित लोग अंधविश्वास में डूबे हुए थे ,वह भूतों पर विश्वास रखते थे उन्हें खुश रखने के लिए कई तरह की बलि देते थे,और बीमार होने पर भगत बुलाया जाता था ,उससे मरीज का इलाज कराया जाता था। यह सब काम रात को होते थे।

संन्दर्भ सूची

1.अभय कुमार दुबे, आधुनिक के आइने में दलित, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृ421

2.अम्बेडकर, मनुस्मृति अध्याय,श्लोकक31,उध्दरण पृ 158

3.सोहन राज तातेड,विद्यमान सिंह,धर्म एक स्वरूप अनेक, पृ 169

4. तुलसीराम, मर्दहिया, आत्मकथा प्रकाशन राजकमल नई दिल्ली पृ11

5. वही पृ11

6. वही पृ48-49

7. वही पृ50

8 वही पृ112

9. वही पृ27

10 .ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन, आत्मकथा प्रकाशन राधाकृष्ण नई दिल्ली पृ37

11. वही पृ 53

12 वही पृ53

13.वही पृ57

14. वही पृ100

15. तुलसीराम , मुर्दहिया, आत्मकथा पृ 20

16 वही पृ 16

17 ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन, आत्मकथा पृ37

18. वही पृ42

19.वही पृ 45

20. वही पृ 45

21. वही पृ 79

चतुर्य अध्याय

' मुर्दहिया' और 'जूठन' आत्मकथाओं में आर्थिक पक्ष

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

देशों क्षेत्रों या व्यक्तिओ की आर्थिक समृद्धि के वृद्धि को आर्थिक कहते है।नीति निर्माण की दृष्टि से आर्थिक विकास उन सभी प्रयत्नों को कहते हैं।जिनका लक्ष्य किसी जन समुदाय की आर्थिक स्थिति व जीवन स्तर के सुधार के लिये अपनाये जाते है।

गरीबी

गरीबी भूख है और उस अवस्था में जु ड़ो हुई निरन्तरता है,यानि भूख की स्थिति का बने रहना,पैसे की कमी जिससे स्वास्थ्य से जु ड़े सुविधाओं का लाभ उठाया जाना कठिन हो ही,वह गरीबी है।गरीबी के अंतर्गत वे लोग रहते हैं जिनमे सामान स्तर सुविधाओं का अभाव पाया जाता है।इसी तरह दलित समाज में भी लोग गरीब थे,जिनको दो वक्त की रोटी नसीब भी नहीं होती थी,सारा दिन काम करने पर भी इन्हें अपनी मेंहनत का पैसा तक नहीं मिलता था।दलित का जीवन जहां सामाजिक उत्पी ड़न,शोषन दमन से भरा हुआ है ,आर्थिक विवशताओं और विसंगतिपूर्ण स्थितियों ने दलित जीवन को नर्क बनाया है।दलित लोगों को ना तो अच्छे से खाना मिलता था।ना वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाया सकते थे , उन्हें हर जगह अपमानजनक बातें सुनने को मिलती थी।

डॉ. तुलसीराम जी के अनुसार- "हकीकत यह थी कि उन दिनों मेरी परिस्थिति वाले बच्चों के लिए दो रुपया जुटाना एक बहुत बडा संघर्ष था"[1]

दलित लोग इतने गरीब थे कि वह अपने बच्चों को भेजने जो तो तैयार थे कितुं उनके पास पैसे नहीं थे वह उन्हें शिक्षा दिलाया सके।उन्हें दो वक्त खाने के लाले पड जाते थे ,सारा दिन मेंहनत करने के बाद भी दो वक्त खाना नसीब नहीं होता था।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

"हमारी दलित बस्ती में बहुत गरीबी थी ,पैसा देकर कुछ खरीदना ब डा मुश्किल पैदा कर देता था,इसलिए सब कुछ अनाज देकर ही लिया जाता था।घर में ढिबरी जलाने के लिए मिट्टी के तेल से लेकर मिर्च मसाला तक अनाज देकर ही खरीदा जाता था"[2]

दलित समाज के लोगों की इतनी दयनीय स्थिति थी ,उन्हें खाने के लिए कुछ नहीं मिलता था। वह यदि किसी से खाने के लिए कुछ मांगते थे तो अनके बदले में लोगो को बहुत कुछ देने को पड़ता था।इसलिए वह अपने बच्चों को स्कूल तक नहीं भेजते थे।जो बच्चे स्कूल जाते थे , उनके पास ना तो किताबे होती थी ,और ना उन बच्चों को कोई स्कूल में छूता था वह लोग अलग से बैठते थे।दलित लोग अंधविश्वास में ज्यादा विश्वास रखते थे।वह इस चक्कर में बहुत कुछ खो देते थे।दलित लोगों कि बस्ती गंदगी भरी रहती थी।स्कूल का काम करने के लिए बच्चों के पास कापी भी नहीं होती थी,वह जमीन पर लिखकर गुजारा करते थे।

"मैं गणित के प्रश्नों को चिकनी जमीन पर खपडे से लिखकर हल कर लेता था।फिर उसे छोटे-छोटे अक्षरों में पटरी या कापी पर उतार लेता था।इसका एकमात्र कारण यह था कि मेरे पास कापी का हमेशा अभाव रहता था।इसलिए रफ के कागज बचाने के लिए जमीन पर गणित हल कर लेता था। उस समय पु ड़िया में स्याही बाजार में बिकती थी जिसे पानी में घोलकर लिखा जाता था।हमें पु ड़िया वाली स्याही खरीदना एक बडी समस्या लगती थी। मेरे जैसे लगभग सभी गरीब बच्चे घर में चावल को तवे पर खूब जलाकर कोयले जैसा कर देते थे,फिर उसे सिल पर लोढे से पीसकर पाऊडर बनाकर पानी में घोलकर स्याही बना लेते थे"[3]

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

दलित लोगों के साथ उनके बच्चों को भी श्रम करना प ड़ता था।अधिकतर बच्चें स्कूल जाने से पहले खेतों में काम करके जाते थे।दलित लोग इतने गरीब थे कि उन्हें ना खुद खाने को मिलता ना बच्चों को स्कूल जाते समय बहुत सारे बच्चे भुखे जाते थे।जब कई बार परीक्षा देने के लिए बच्चों गांव से बाहर जाते थे ,तो घर पर जो थोडा बहुत खाना होता था ,उसे साथ लेकर जाते थे वहां जाकर उसे खा लेते थे ,दलित छात्र दूसरे बच्चों से अलग बैठ कर खाते थे , ताकि वह उनका मजाक ना बना सके।दलित छात्रों को बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था।वह चाहें उनके स्कूल का समय हो या उनके परीक्षा का हो।

"दलित छात्रों के लिए यह इम्तहान ब ड़ी कठिनाई वाला था ,किन्तु ज्ञान की कमी से नहीं , बल्कि खानपान की कमी से।समूह में रहते हुए बबुरा धनहुवां के उस परीक्षा केन्द्र पर कुछ सम्मानजनक भोजन की आवश्यकता तो अवश्य थी ,किंतु दलितों के लिए पूर्ण रूप से असम्भव।मेरे जैसे तमाम दलित छात्र वही महुवे का लाटा तथा चोटे में सने सूखे सत्तू की गठरी लिये चल पड़े"[4]

डॉ.तुलसीराम ने अपनी आत्मकथा मुर्दहिया में बताया कि उन्होंने किस तरह से स्कूली जीवन को व्यतीत किया हैं,बहुत सारी मुश्किलों का सामना करके वह एक महान् व्यक्ति बने और इसी तरह ओमप्रकाश वाल्मिकि जी ने अपनी आत्मकथा जूठन में लिखा हैं कि दलितों लोगों को सारा दिन श्रम करना प ड़ता था,उसके वाबजूद भी उनको पैसा नहीं मिलता था। पुरुषों के साथ-साथ औरते भी बरावर का काम करती थी।सारा दिन काम में निकल जाता था,वह खाने के लिए अपना पेट भरे या अपने बच्चों को खाने के लिए कुछ दें।दलित लोगों की सारी जिंदगी गरीबी में निकल जाती थी।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी अनुसार- "टोकरा भर तो जूठन ले जा रही है ऊपर से जाकतों के लिए खाणा माँग री है ?अपनी औकात में रह चूहडी उठा टोकरा दरवाजे से और चलती बन"[5]

दलित लोगों को उनके नाम से नहीं उनकी जाति से पुकारा जाता था, जूठन के लिए भी उन्हें ताने सुनने को मिलते थे,जूठन भी मुफ्त में नहीं मिलती थी।जूठन खाने के लिए उनको बरसो इन्तजार रहता था,कब शादी समारोह हो जिस पर वह जाकर जूठन उठाया सकें।जूठन खाने के लिए उनको कई तरह का श्रम करना प ड़ता था।दलित लोगों को जो जूठन में मिली जो पुरियां होती थी उनको धूप में सुखा कर रख लेते थे,बरसात के दिनो में उन पुरियों को पानी में भिगोकर नमक के साथ खा लेते थे।

"मेरी माँ इन सब मेहनत-मजदूरियों के साथ-साथ आठ-दस तगाओं के घर तथा घेर(मुर्दों का बैठकखाना तथा मवेशियों को बाँधने की जगह)में साफ-सफाई का काम करती थी।इस काम में मेरी बहन, बड़ो भाभी तथा जसबीर और जनेसर माँ का हाथ बँटाते थे।बडा भाई सुखबीर तगाओं के यहाँ वार्षिक नौकर की तरह काम करता था"[6]

प्रत्येक तगाओं के घर में दस से पन्द्रह गाय ,भैंस और बैल सामान्य बात थी।उनका गोबर उठाकर गाँव से बाहर उपले बनाने की जगह पर डालना प ड़ता था।प्रत्येक घर से रोज पाँच-छह टोकरे गोबर निकलता था।सर्दी के महीनों में यह काम बहुत कष्टदायक होता था।रात भर जानवरों का गोबर और मूत्र पूरी जगह में फैल जाता था।इन दिनों में दालानों में भरी दुर्गन्ध से गोबर ढूँढ़-ढूँढ़ के निकालना बहुत तकलीफदेह होता था,दुर्गन्ध से सिर भिन्ना जाता था।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

"बरसो-बरस चावल के माँड़ से बनी सब्जी खाकर अपने जीवन के अँधेरे तहखानों से बाहर आने का संघर्ष किया है।माँड़ पी-पीकर हमारे पेट फूल जाते थे।भूख मर जाती थी। यहीं गाय का दूध था हमारे लिए यही था स्वादिष्ट भोजन भी।यहीं था दारुण जीवन जिसकी दग्धता में झुलसकर जिस्म का रंग बदल गया हैं"[7]

इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि दलितों की स्थिति कितनी दयनीय थी , झूठा खाने के लिए भी उनको कितना श्रम करना प ड़ता था। श्रम करने के बावजूद भी उनको मुफ्त में खाना नहीं मिलता था ,अपनी आधारभुत वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए अपने शरीर और मानसिक यातनाएं झेलने प ड़ती थी।इसलिए उनकी मानसिक स्थिति व्यक्तित्व को दर्शाती थी।

"हम चूहडे-चमारों के कपड़े नहीं धोते,न ही इस्तरी करते हैं। जो तेरे कप ड़े पे इस्तरी कर देगें तो तगा हमसे कप ड़े न धुलवाएँगे ,म्हारी तो रोजी रोटी चली जा गी...उसने साफ-साफ जबाव दे दिया था।उसके इस उत्तर ने मुझे हताश कर दिया था। बिना कुछ कहे ,मैं उलटे पाँव लौट आया था।मन भारी हो गया था।ईश्वर से भरोसा उठ गया था।गरीबी और अभाव से किसी तरह निबटा जा सकता है,जाति से पार पाना उतना ही कठिन है"[8]

दलित लोगों को तो अपमानित होना ही प ड़ता साथ ही दलित छात्रों को भी शिक्षा के समय कई तरह की कठिनाईयों का सामना करना प ड़ता था। स्कूल में अध्यापक से तो अपमानित बातें सुनने को मिलती थी,अध्यापकों के साथ-साथ काम वाले लोग भी उन्हें खरी-खोटी सुना देते थे।वह लोग उनका काम करने से मना कर देते थे।यदि वह लोग उनका काम कर देते थे

तो उनको बदले में उनका काम करना प ड़ता था।खाने के लिए दर-दर भटकना प ड़ता था,उसके बावजूद भी उनको खाने को नहीं मिलता था।।उनका जीवन अपाहिज जैसा है।

"जीवन जैसे पंगु हो गया था। लोग गाँव भर में घूम रहे थे,कहीं से कुछ चावल-गेहूँ मिल जाए तो चूल्हा जले।ऐसे दिनों में उधार भी नहीं मिलता दर- र भटककर कई लोग खाली हाथ आ गए थे।पिताजी भी खाली हाथ ही आ गए थे।उनके चेहरे पर बेबसी थी।सगवा प्रधान ने अनाज देने की शर्त भी रख दी थी।अपने किसी ल ड़के को सालाना नौकर रख दो ,बदले में जितना अनाज चाहो ले जाओ"[9]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि दलितों का जीवन कितना दयनीय था ,बरसात के दिनों में खाने के लिए उन्हे कुछ नहीं मिलता था बरसात के दिनों में खाना बचा कर रखते थे ताकि वह उन दिनों में बचा हुआ खाना खा सके।बरसात इतने दिनों तक चलती थी जो खाना बचा कर रखते थे वह सारा खत्म हो जाता था ,जिसके कारण उनको बहुत सारी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था।गरीब लोगों के घर कितने दिनों तक चूल्हा नहीं जलता था ,वह जब स्वर्ण जाति के लोगों से अनाज मांगने जाते थे ,तो उनको बहुत अपमानित होना प ड़ता था।लोगों के घर गिर जाते थे ,जिसके लिए वह गांव से बाहर किसी एक सुरक्षित जगह पर रहते थे।जहां बहुत सारे लोग एक साथ रहते थे।

अकाल की स्थिति

अकाल भोजन का एक व्यापक अभाव है ,जो किसी भी पशुवर्गीय प्रजाति पर लागू हो सकता है।दलित लोगों की आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि रहने के लिए उनके पास छत

भी नहीं थी ,बारिश के मौसम में लोगों के घर गिर जाते थे ,खाने के लिए अनाज भी नहीं होता था।सारे लोग एक जगह इकट्ठे होते थे बरसातों के दिनों में।कई दिनों तक वह एक ही जगह में रहते थे,वहां रहकर ही खाना बनाते थे,बरसातों के चलते अनाज तक खत्म हो जाता था,मांगने पर कोई नहीं देता था,जिसके कारण कई दिनों तक भुख रहते थे।चावलों का पानी पीकर गुजारा करते थे,अकाल के दिनों में दलितों की स्थिति बहुत दयनीय होती थी। दलित लोगों का जीवन बहुत दयनीय थी। इसी तरह डॉ. तुलसीराम और ओमप्रकाश वाल्मिकि ने अपनी आत्मकथा में लिखा हैं कि किस तरह उन्होंने दयनीय जीवन व्यतीत किया है।इसका उदाहरण डॉ. तुल्सीराम की आत्मकथा मुर्दहिया में इस प्रकार दिया गया है।

"खास करके बरसात के दिनों में भुखमरी की स्थिति पैदा हो जाती थी। शुरु-शुरु में जब तेज बारिश से कट चुकी फसलों वाले खेतों में पानी भर जाता ,तो उनके अंदर बिल बनाकर रहने वाले हजारों चूहे डूबते हुए पानी की सतह पर ऊपर आ जाते थे।गांव के बच्चे तरकुल या खजूर के पत्तों से बनी झाड़ू लेकर उन चूहों पर टूट प ड़ते थे तथा उन्हें मार-मारकर ढेर सारा घर लाते।मैं भी अन्य बच्चों के साथ टिन की बाल्टी तथा झाड़ू लेकर जाता और झाड़ू से चूहों को मार-मारकर बाल्टी भर जाने पर उन्हें घर लाता।इन चूहों को पहले घर के लोग रहटठा यानी अरहर का डंठल जलाकर उस पर खूब सेंकते थे। इस तरह चूहों के बाल बिल्कूल जल जाते थे।इसके बाद उसको साफ करके उस पर मसाला डालकर उस मांस को पका कर खाया जाता था"[10]

दलित लोगों की इतनी दयनीय स्थिति थी की उनको बरसात के दिनों में खाने को कुछ नहीं था।वह सारा दिन अनाज की तलाश करते कि कहीं से कुछ मिल जाएं।दलित बच्चे खाने के

लिए इधर-उधर घूमते रहते थे।यदि उनको खाने के लिए कुछ ना मिले तो वह खेतों में जाकर कुछ खाने को ढूँढते थे।फसले कटने के बाद खेतों में से चूहे पक ड़ कर लाते थे ,घर पर जाकर उसको पका कर खा लेते थे।उसी से वह अपना पेट भरते थे ,कई बार उनको पेट भरने के लिए मछली खाना पड़ता था।दलित लोगों का जीवन बहुत बुरा था ,लोग उनको दबा कर रखते थे।

"इसके बाद सभी ब्राह्मण आजमग ढ़ कचहरी गए और सबूत के अभाव में छूटकर चले आएं।गांव भर में शिर मच गया कि जोगी बाबा की कृपा से वे छूट गए।वास्तव में ब्राह्मणों के लिए यह एक बड़ा मोड़ था।मेरी जिन्दगी में भी एक नया मो ड़ आया।मैंने भी उस अकाल में महुवे का लाटा खाते तथा अमौली की सुरीली धुन बजाते पांचवीं कक्षा पास कर लिया"[11]

अकाल के दिनों में हालात इतने खराब होते थे कि बच्चे स्कूल भी नहीं जाते थे।जिसके कारण बच्चे परीक्षा में फेल तक हो जाते थे।दलित छात्रो का स्कूल्से पास हो जाना किसी उत्सव से कम नहीं था,बाह्मण लोग अक्सर दलित बच्चों को ताने सुनाये जाते थे,जो स्कूल में पढ़ने जाते थे। अकाल के दिनों में लोगों के साथ-साथ पशुओं का जीवन भी बहुत बुरा होता था ,पशुओं को बहुत तरह की बीमारी हो जाती थी ,जिसका इलाज दलित लोग नहीं करा सकते थे ,और अधिकतर पशु बरसात के दिनों में मर जाते थे।दलित लोगों का बहुत नुकसान होता था।

"इस दौरान अकाल के कारण पशुओं के चारा का भी टोटा प ड़ गया था।अनेक पालतू पशु भुख तथा बीमारी से पीड़ित हो गए थे। उस वर्ष गांव में अनेक गाय ,भैंस तथा बैल मरने लगे थे।उस समय एक परम्परा के अनुसार गांव का कोई भी हरवाहा अपने मालिक जमींदार के मरे पशु की खाल निकालकर उसे बेचने से मिले धन को अपने पास रख लेता था।ऐसे चमडों

की कीमत प्राय:बीस रुपया होती थी।इस तरह के मरे पशुओं को दलित बास की काडी में पैर की तरह से बांधकर डोली की तरह ढोते हुए मुर्दहिया पर ले जाते थे।वहीं चम ड़े छुडाए जाते थे"[12]

इस प्रकार हम कह सकते है कि बरसात के दिनों में लोगों की स्थिति बहुत ही बुरी होती थी , लोगों के घर गिर जाते थे,रहने के लिए मकान नहीं होता था,उन दर-दर भटकना पड़ता था। रहने को कोई जगह नहीं देता था जिसके पास भी जाते थे लोग दलितों को अपमानित बाते ही सुनाते थे।जिसके कारण दलित सारा दिन जाग कर रात निकालते थे।बरसात का दिन दलितों के लिए किसी नर्क से कम नहीं था।दलित अपना सारा जीवन डर डर के निकाल देते थे।

ओमप्रकाश वाल्मीकि के अनुसार- "1962 के साल में खूब बारिश हुई थी।बस्ती में सभी के घर कच्ची मिट्टी से बने थे।कई दिन लगातार बारिश ने मिट्टी के घरों पर कहर बरपा दिया था।हमारा घर जगह-जगह से टपकने लगा था।जहाँ टपकता वहीं एक खाली बर्तन रख देते थे।बर्तन में टन-टन की आवाज आने लगती थी।ऐसी रातें जाग-जागकर काटनी प ड़ती थीं। हर वक्त एक डर बना रहता था,कब कोई दीवार धसक जाए"[13]

दलित साहित्य बहुत सारे विचारको ने लिखा है ,इसी तरह ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी आत्मकथा जूठन में लिखा है कि उन्होंने कैसा जीवन व्यतीत किया है ।वह लिखते है कि भूख में हमारे लिए चावल का पानी किसी संतुलित भोजन से कम नहीं था ,वह अक्सर बरसात के दिनों में कितने दिनों भुखे रहते थे खाने को कुछ नहीं मिलता था।मकान गिर जाने पर एक पूरा गांव एक जगह एकत्रित रहते थे,और जो मिलता था वह सारे लोग मिल कर खा लेते थे।

अनाज की कमी रहती थी इसलिए उबले चावलों का पानी हो या गुड यहीं सब भुख मिटाने के लिए काम आती थी।

"माँड में नमक मिलाकर पीने से अच्छा लगता था।यदि कभी-कभार गुड मिल जाता था तो

माँड पीने की यह आदत किसी शौक या फैंशन की देन नहीं थी, अभावों और फाकों से बचने की मजबूरी थी।फेंक देने वाली चीज हमारी भूख मिटाती थी"[14]

चारों और गन्दगी फैली रहती थी ,मरे पशुओं और मछली की गंदगी सारे गांव में फैल जाती थी,जहां तो रहना बहुत दूर की बात थी सास लेना भी बहुत मुश्किल था।लोगों की सारी जिंदगी गरीबी में ही निकल जाती थी।साहित्य की रचना तो बहुत सारे विचारको ने की है कितुं किसी विचारक ने दलितों के जीवन के बारे में नही कि उन्होंने कैसे जीवन व्यतीत किया हैं। बरसात के दिन दलितों के लिए किसी नरक से कम नही थे।

"साहित्य में नरक की सिर्फ कल्पना है।हमारे लिए बरसात के दिन किसी नारकीय जीवन से कम ना थे।हमने इसे साकार रूप में जीते- जी भोगा है"[15]

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने उन कवियों साहित्यकारों लेखको पर कटाक्ष किया है।जो परम्परागत में बंधे हुए हैं।वह अपनी लेखनी को यहां तक सीमित करना चाहते है।यर्थाथ के साथ सम्बन्धित नहीं करना चाहता ,यह उनकी विकृत मानसिकता को दर्शाते है।ओमप्रकाश वाल्मीकि ने ऐसे साहित्य के बारे में बताया है जो उनके संदर्भ से स्पष्ट हो जाता है।

अंत में कहा जा सकता है कि दलितों की सामजिक समस्याओं का अंत करने के लिए उन्हें आर्थिक रूप से सुदृ ढ़ करना होगा।सामाजिक लोकतंत्र का सपना पूरा करने की दृष्टि से दलितों को ,अपनी दीनता-हीनता वाली भावना को बाहर कर आत्मसम्मानित नागरिक

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

बनने हेतु पहले खुद समानता को आत्मसात करना होगा।दलितों को भी अपनी हीन भावना को दूर कर प्रगति के मार्ग पर चलना चाहिए।दलितों की स्थिति के बारे में साहित्य में बहुत सारे लेखको ने लिखा है।उन्होंने अपने नाटक ,कहानियों के दलितों की स्थिति को प्रस्तुत किया हैं।दलितों को आर्थिक स्थिति के कारण कितनी परेशानीयों का सामना करना प ड़ता था।पैसे न होने के कारण बहुत सारे लोग अशिक्षा ही रह जाते थे।अकाल के कारण कई दिनों तक लोग भूखे रहते थे,और खाने के लिए कुछ नहीं मिलता था।

संन्दर्भ सूची

1.तुलसीराम ,मुर्दहिया, आत्मकथा प्रकाशन राजकमल नई दिल्ली पृ 26

2. वही पृ33
3. वही पृ54
4. वही पृ82
5. ओमप्रकाश वाल्मीकि , जूठन, आत्मकथा प्रकाशन राधाकृष्ण नई दिल्ली पृ21
6. वही पृ 19
7. वही पृ35
8. वही पृ28

9. वही पृ33

10. तुलसीराम, मुर्दहिया, आत्मकथा पृ33

11.वही 82

12.वही पृ 86

13 .ओमप्रकाश वाल्मीकि,जूठन, आत्मकथा पृ31

14. वही पृ 34

15. वही पृ35

पंचम अध्याय

'मुर्दहिया' और 'जूठन' आत्मकथाओं में राजनीतिक पक्ष

राजनीति विज्ञान अध्ययन का एक विस्तृत विषय या क्षेत्र है।राजनीति विज्ञान का अध्ययन में कई बातें शामिल है ,राजनितिक चिंतक ,राजनीतिक सिद्धान्त ,राजनीतिक दर्शन , राजनीतिक विचारधारा ,संस्थागत या संरचनात्मक ढांचा तुलनात्मक राजनीतिक , लोक

प्रशासन, अंतर्राष्टीय कानून और संगठन आदि।राजनीति विज्ञान का अभाव बहुत प्राचीन है।राजनीति का अध्ययन आज के सन्दर्भ में पहले की अपेक्षा एक ओर जहां अत्यधिक महत्वपूर्ण है वहीं दूसरी ओर वह अत्यंत जटिल भी है।इस विकासक्रम में राजनीति के सम्बन्ध में दो प्रमुख दृष्टिकोणों का उदय हुआ है , परम्परागत दृष्टिकोण एवं आधुनिक दृष्टिकोण। परम्परागत दृष्टिकोण राज्य प्रधानता का परिचय देता है जबकि आधुनिक दृष्टिकोण प्रक्रिया प्रधानता का।विचारक अरस्तू को राजनीति का पितामह कहा जाता है। डॉ.तुलसीराम और ओमप्रकाश वाल्मिकि ने अपनी आत्मकथा मुर्दहिया और जूठन में राजनीति के बारे में लिखा हैं उस समय ऐसे लोग जो चुनावकर्तों के लालच में आकर उनके कहने पर वोट डालते थे ,दलितों के अलग मुखिया होते थे और अन्य जातियों के अलग होते थे, मुखिया के आदेश को सब मानते थे, न मानने वाले को सजा होती थी। कई बार उसे गांव से बाहर निकाल दिया जाता था।

पंचायती राज का वर्णन

पंचों को परमेश्बर के तुल्य समझा जाता था क्योंकि ये पंच अपना दायित्व पूर्ण निष्पक्ष और नि : स्वार्थ भाव से निभाते थे।समय और परिस्थितियों के अनुसार नगर और कस्बों के स्वरुप में परिवर्तन आते गए परंतु भारत के ग्रामीण अंचलों में पंचायती राज प्रणाली पहले की भांति ही कार्य करती रही।स्वतंत्र भारत में पंचायती राज प्रणाली अक्टूबर1952ई. में प्रारंभ हुई पंरतु गाँवों के निर्धन एंव उपेक्षित लोगों की सहभागिता न होने के कारण यह असफल हो गई।भारत में पंचायती राज प्रणाली की पुन: शुरुआत 1959

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

ई. में बलवंत राय मेहता समिति की रिपोर्ट पर हुई।गांधी के विचारों के अनुरूप पंचायत राज में गणराज्य के सभी गुण होंने चाहिए।जिसमें स्वालम्बन , स्वाशसन और आवश्यकतानुसार स्वतंत्रता और विकेन्द्रीकरण तथा कार्यपालिका , व्यवस्थापिका और न्यायपालिका के सभी अधिकार पंचायत के पास हो।निर्णय आम सहमति या जनहित में हो,न कि मत गिनती द्वारा गांवों में गरीबी और बेरोजगारी निवारण जैसी सभी नीतियां निर्मित करने का दायित्व व अधिकार रखते हो।वास्तव में ग्राम का नागरिक बेरोजगार , भुखा, वस्त्रहीन न रहें ऐसे दायित्वों की पूर्ति का कार्य पंचायते करेगी।व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता भोजन वस्त्र , आवास की जिम्मेदारी गांव अपने स्तर पर प्रबन्ध करेगा।गांधी जहां आत्मनिर्भर गांवस की कल्पना करते हैं , वहां आज हमारे गांव वैश्वीकरण के युग में अधिकतर आवश्यकताओं के लिए प्रराश्रित होते चले जा रहे हैं। इस योजना में गांव को आत्मनिर्भर बनाने का आधार नहीं बनाया गया।दलितों के मुखिया अलग होते थे और उनके फैसले भी वहीं करते थे,चुनावों के समय दलित लोगों को चुनावकर्तो खरीद लेते है , वह उन्हें कई तरह के लालच देकर अपना मतलब सिद्व करते थे।

डॉ.तुलसीराम जी अनुसार- "सन् 1950 के दशक में ऐसी पंचायतों का दलितो के बीच काफी बोलबाला था ,किंतु 1960 के दशक से धीरे धीरे ये परम्पराएं विलुप्त होने लगी।आज के जमाने में न वैसे चौधरी रहे और न वैसी पंचायतों के नामोनिशाअन"[1]

लोग मुखिया के अनुसार वोट डालते थे। लोगो को चुनावों के समय खरीद लिया जाता था , उन्हें कई तरह के लालच दिए जाते थे।ताकि वह उनको वोट डालें , और लोग उनके कहने पर

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

वोट डालते थे।इसी तरह डॉ. तुलसीराम ने अपनी आत्मकथा में लिखा हैं किस तरह वह एक राजनीतिज्ञ बने।उन्हें कई ऐसे लोग मिले जिनसे उन्हेंने प्रेरणा ली और राजनीतिक में आएं।कई ऐसे आंदोलनो में भाग लिया जो दलित के लिए हो।

"स्मरण रहे कि ये वही तेजबहादुर सिंह थे ,जिन्होंने 1942 के भारत छो ड़ो आंदोलन के दौरान मेरे ननिहाल वाला तरवां का थाना फूंक दिया था।मार्कशीट अटेस्ट करने के बाद उन्होंने मुझे मिलते रहने के लिए कहा।तेजबहादुर सिंह पहले ऐसे नेता थे जिनसे व्यक्तिगत रूप से मेरी मुलाकात हुई।इसका परिणाम यह हुआ कि मेरा मार्क्सवादी प्रभाव में आना लगभग पक्का हो गया"[2]

मार्क्सवाद के साथ-साथ डॉ.तुलसीराम पर डॉ.अम्बेडकर का भी बहुत प्रभाव प ड़ा। डॉ.अम्बेडकर ऐसे नेता थे जिन्होंने दलितों को अधिकार दिलाने के लिए बहुत संघर्ष किए थे।डॉ.अम्बेडकर दलित समाज को जागरूक करने के साथ-साथ उसे राष्ट्रीय धारा से जो ड़ने का कार्य करते हैं। डॉ.तुलसीराम में राजनीतिक प्रभाव कालेज में ही पडा गया था ,जिसके चलते उन्होंने कालेज में कितने आंदोलनो में भाग लिया था।

"गोरखपुर विश्वविद्यालय में वकालत की प ढ़ाई करनेवाले सुखनंदन राम प्राय:अम्बेडकर हास्टल में आते और छात्रों को इकटठा कर मार्क्सवाद के बारे में बातें करने लगते।उनका भी मेरे ऊपर बडा राजनीतिक प्रभाव पड़ा था"[3]

डॉ.तुलसीराम ने अपनी आत्मकथा में राजनीतिक पर चर्चा की हैं।उन्होंने लिखा है उस समय कि सरकारें कैसी थी ,पंचायत के कहने पर सारा गांव चलता है।मुखिया कि बात को सब

मानते थे।गलती करने पर जो सजा मुखिया द्वारा दी जाती थी उसको कोई बदल नहीं सकता।इसी तरह ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी आत्मकथा जूठन में भी दलित लोगों और पंचायती राज का वर्णन किया है।उस समय शादी या और कोई भी समारोह होता था ,सबसे पहले वहां पर जो भी बनता सबको पहले मुखिया को भेजा जाता था।स्कूल में छात्रों द्वारा कई तरह के जूलूस निकाले जाते थे।छात्रों को भाषण देकर अध्यापक कई तरीको से प्रेरित करते थे।

"15अगस्त, 26 जनवरी तथा 2 अक्तूबर के दिन पूरे प्राइमरी पाठशाला के छात्रों को गांधी टोपी पहनकर तथा हाथ में घर से बनाकर लाए हुए कागज के तिरंगे झंडे को लेकर आसपास के गांवों में प्रभावतफेरी निकालना पड़ता था।हम जुलूस में अलग झंडियां लेकर 'गांधी, नेहरू तथा सरदार पटेल जिन्दाबाद का नारा लगाते हुए चलते तथा साथ में यह भी गाते :हिन्दु, मुस्लिम,सिख,ईसाई सब हैं भाई भाई।मास्टर साहब लोग भाषण में कहते कि गांधी जी ने ही हमें आजादी दिलाई अत:हमें उनके कदमों पर चलना चाहिए। ये बातें सुनकर मैं बहुत खुश होता था किन्तु मुझे जब भी गांधी जी याद आते ,अविलम्ब मुंशी जी तथा मिसीर बाबा याद आने लगते थे"[4]

स्कूलों में सारे साल में तीनो दिनों को बहुत महत्ता के साथ मनाया था।उस दिन बच्चों को घर से ही टोपी और कपडे पहन कर आने को बोला जाता था।सभी बच्चों को पूरे गांव में घुमाया जाता था।सारे छात्र हाथों में झंडियां और सिर में टोपी पहनकर आस पास के सभी गांव में नारे लगाते जाते थे।और स्कूल में एक अध्यापक द्वारा भाषण प्रस्तुत किया जाता था। अध्यापक कई तरह की बाते छात्रों को बताये थे।इन महान नेताओं देश के लिए कुर्बानी देकर सबको आजादी दिलाई थी।ताकि छात्र उनसे प्रभावित होकर उन्हें हमेशा याद रखे।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

ओमप्रकाश वाल्मीकि-"महाराष्ट्र में दलित आन्दोलन को एक नया रूप दिया था 'दलित पेंथर' ने।दलित पेंथर में नेता और कार्यकर्ता मार्क्सवादी और अम्बेडकरवादी विचारधारा को जोड़कर एक नया प्रयोग कर रहे थे ,जिनकी चमक में समूचा महाराष्ट्र एक बार फिर दलित आन्दोलन के उत्कर्ष को देख रहा था।लेकिन यह प्रयोग बुरी तरह असफल रहा था"[5]

उस समय समाज में दलितों की स्थिति हर क्षेत्र में दयनीय थी।उनको सामाजिक ,आर्थिक और धार्मिक,राजनीतिक सभी और से लोग हीनता की भावना से देखते थे।दलितों की अपनी पंचायत होती थी।सवर्णें जाती वाले लोग दलितों को सभी अधिकारों से वंचित रखते थे।दलित हमेशा दबे रहते थे,वह उन लोगों से हमेशा अलग रहते थे।दलित लोग ना चाहकर भी सवर्णें का विरोध नहीं करते थे।

"सवर्णें ने 'शोषित कर्मचारी संघ'जैसे छठा संगठन बनाए थे,जो सुनियोजित ढंग से दलितों के विरुद्व साजिशें रच रहे थे।चारों ओर निराशा और भय का वातावरण था।दलित कर्मचारी ही नहीं,अधिकारी भी भयभीत थे।उनका कोई ऐसा संगठन भी नहीं था।पारस्परिक संवादहीन होने के कारण ,वे अकेले-अकेले अपनी समस्याओं में उलझे थे।एकजुटता की कमी कारण उनका आत्मविश्वास डगमगाने लगा था"[6]

दलितों को अधिकार दिलाने के लिए बहुत सारे नेताओ ने सहयोग किया था।सवर्ण जाति वाले दलितों को ऊपर उठने नहीं थे।यदि उन्हें कोई अधिकार मिल भी जाता था।सवर्णें लोगो इसका बहुत विरोध किया जाता था।दलित लोगों के खिलाफ कई तरह के मार्चे निकाले जाते थे।बिना गलती बहुत सारे लोगों को सजा मिल जाती थी।वह लोग ना चाहकर भी कुछ नहीं बोलते थे।चुपचाप दिए गए हुक्म को मानते थे।विरोध करने पर सजा मिलती थी।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

"विधानसभा में नामान्तर का प्रस्ताव पारित हो गया था।लेकिन सवर्णें ने बहुत ब ड़े पैमाने पर इस प्रस्ताव का विरोध किया था।जगह- जगह तोड-फो ड़ दंगे शुरू हो गए थे।अहमदपुर , औरंगाबाद,नागपुर,सोलापुर,बम्बई,नासिक,अमरावती आदि में स्थिति तनावपूर्ण।मराठवाडा में दंगों का प्रभाव कुछ ज्यादा ही था।दलित-बस्तियाँ फूँकी जा रही थी।सैकडों लोग मारे जा चुके थे।अखबारों में छपी खबरें दिल दहला रही थीं"[7]

पार्टीबाजी

दलित समाज में लोगों की अपनी अलग पंचायते होती थी।सवर्णे जाति वाले लोगों का इसमें कोई सहयोग नहीं था।चुनाव के दौरान जो गरीब दलित लोग होते थे।वह पैसे और शराब के लालच में मुखिया के कहने पर वोट डालते थे।दलितों में भी सवर्णे जाति के लोगों की तरह पार्टीबाजी हो गई थी।किसको पार्टी को वोट डालनी है किसको नहीं यह दलित नही जानते थे ।उन्हें सही और गलत का पता नहीं था।

डॉ.तुलसीराम -"मेरे सबसे बडे चाचा बारहगांव के चौधरी है , इसलिए सारे दलित उनके ही कहने पर किसी पार्टी को वोट डालेंगे।ब्राह्मणों के मुखिया यमुना पांडे थे , उनके नेतृत्व में ब्राह्मणों का जत्था चुनाव सम्पन्न होने के एक दिन पहले तक कौडे पर आकर कांग्रेस को वोट देने के लिए कहता"[8]

चुनाव के दौरान दलितों लोगों के साथ कई बार सवर्ण जाति वाले लोग भी दलितों का समर्थन करते थे।दलित बसती से बाहर वह कई लोग इकट्ठा होकर बात करते थे।चुनाव के दौरान कई तरह की रैली निकाली जाती थी।दोनों पार्टी वाले लोग एक दुसरे के खिलाफ पर्दशन करते थे।एक पार्टी दुसरी पार्टी को नीचा दिखाने के लिए कोई कमी नहीं छोड़ती थी।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

"रात का खाना खाने के बाद गांव के करीब दर्जन भर प्रमुख ब्राह्मण रोज हमारे घर के सामने उस जलते हुए कौडे के चारों तरफ बैठ जाते थे और वे चुनाव पर चर्चा शुरू कर देते थे। हमारे क्षेत्र के तमाम बाह्मण उस समय की दो बैलों की जोड़ी चुनाव चिह्न वाली कांग्रेज पार्टी के कट्टर समर्थक थे।हमारे गांव के ब्राह्मण भी कांग्रेस के ही समर्थक थे"[9]

डॉ.तुलसीराम ने अपनी आत्मकथा मुर्दहिया में राजनीतिक के बारे में लिखा हैं।किस तरह चुनावकारी वोट लेने के लिए क्या कुछ करते थे है। एक दुसरे विरोध करते थे।इसी तरह ओमप्रकाश वाल्मीकि ने भी अपनी आत्मकथा जूठन में कई तरह के राजनीतिज्ञ के बारे लिखा हैं,जिनसे वह प्रभावित होकर समाज के सामने आये।गांव में चुनाव के दौरान खूब शराब चलती थी,और लोगो को ओर भी कई तरह के लालच दिये जाते थे।जिसके चलते वह उनके आगे बिक जाते थे।

"साथ ही सुरजन राम ,जो स्वयं आजमगढ़ के एक प्रख्यात दलित नेता थे ,मेरे घर के सामने वाली दीवार पर गेरु से एक विशाल हंसिया पर चढ़ो गेहूं की बाली का चित्र बनाकर सबसे पार्टी को वोट देने की अपील की और पास वाले गांव में चले गए"[10]

चुनावों के दौरान कई तरह नेता आकर दलित लोगों को चुनाव के लिए अपील करते थे।वह ऐसा नेता थे जो सिर्फ चुनावों के दिनों में दिखाई देते थे ,वैसे कभी दिखाई नहीं दिये।चुनाव होने के बाद कोई नेता आकर पूछता तक नही थे,वादे करके जाते परन्तु पूरा कोई नही करता था।ना कोई आकर दलितों का हाल पूछता था,यदि दलित लोग उनके पास मदद मांगने जाते थे तो उन्हें कई तरह के ताने सुना कर घर से बाहर निकाल दिया जाता था।आज के समाज में

भी यदि हाल नेता लोग चुनावों के दिनों में अपना प्रचार करने आते हैं।जब वह चुनाव जीत जाते है,तो उसके बाद द्वारा कभी वहां पर नहीं आते।

ओमप्रकाश वाल्मीकि-"चुनाव प्रचार में रु ड़की के आसपास के गाँव मोहल्लों में हम लोग पैदल घूमे थे।उन दिनों लोगों के जीवन को और अधिक पास से देखने का मौका मिला था।उनके दुख-दर्द सुने थे।ऐसे लोगों की संख्या ज्यादा थी जो लोकतंत्र औ मत का सही अर्थ नहीं जानते थे।एक कागज का टुकडा बक्से में डालकर एव क्या करते हैं ,उनकी समझ से बाहर था।कितनी मासूमियत थी उन लोगों में जो आजादी के मूल्यों और अर्थो से अनजान थे।सचमुच आजादी वहाँ तक पहुँची ही कहाँ थी,सत्ता के दलाल उनका शोषण और इस्तेमाल कर रहे थे"[11]

इसी तरह आज भी आजादी के बर्षो बाद भी लोग स्वंतत्र नहीं आज भी लोग अपने अधिकारों के लिए लड़ रहे है। लोगों को आपस में लडने का कार्य सरकारें करा रही है।गरीब लोगों लालच देकर कई तरह के काम कराये जाते थे।दलित लोग आज भी कहीं न कहीं अपने अधिकारों के लिए ल ड़ रहे।शोषणकारी चुनाव के दौरान ही लोगों से पूछते है ,उसके बाद कभी मिलते भी नही।आज भी लोगों के लिए नहीं सत्ता में बैठे लोग कुर्सी के लिए लड़ रहे है।

"विधानसभा में नामान्तर का प्रस्ताव पारित हो गया था।लेकिन सवर्णों ने बहुत ब ड़े पैमाने पर इस प्रस्ताव का विरोध किया था।जगह-जगह तोड-फोड ,दंगे शुरू हो गया थे।अहमदपुर,औरंगाबाद,नागपुर,सोलापुर,बम्बई,नासिक,अमरावती आदि में स्थिति तनावपूर्ण थी।मराठवाडा में दंगों का प्रभाव कुछ ज्यादा ही था।दलित-बस्तियाँ फूँकी जा रही थी।सैकडों लोग मारे जा चुके थे।अख्बारों में छपी खबरें दिल दहला रही थी"[12]

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

अंत में हम कह सकते है कि दलित समाज में आज भी जागरूकता की आवश्कता है। आज भी शासक वर्ग उन पर अपना अधिकार जमाकर बैठा है।वह दलित लोगों को अपने काम के लिए इस्तेमाल कर रहा है। चुनाव के दौरान लोगों को कई तरह के लालच देकर उनको खरीदा जाता था। वह उनके कहने पर ही वोट डालते थे।लोगों को उनकी हर बात माननी पड़ती थी,ना मानने पर सजा मिलती थी।दलितों को अधिकार दिलाने के लिए कई नेताओं ने संघर्षे किए थे।डॉ अम्बेडकर ने दलित समाज को राष्ट्रीय धारा में जोड़ने के लिए अनेक प्रयास किये और उन लोगों में जागरूकता फैलाई।

संन्दर्भ सूची

1. तुलसीराम, मुर्दहिया आत्मकथा, प्रकाशन राजकमल नई दिल्ली, पृ 17

2. वही पृ 116

3. वही पृ183

4. वही पृ 54-55

5. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन,आत्मकथा पृ132

6. वही133

7. वही पृ131

8.तुलसीराम , मुर्दहिया, आत्मकथा, पृ 37

9.वही पृ 37

10. वही 38

11. ओमप्रकाश वाल्मीकि , जूठन, आत्मकथा,पृ94

12 वही पृ131

छठा अध्याय

दलितों पर हो रहे अत्याचार को दूर करने हेतु उपाय और सुझाव

दिन महीने साल बदल रहे हैं ,किंतु जो नहीं बदला वह हैं दलितों का उत्पी ड़न।जिन्हें समाज में कुचला दबा हुआ माना गया हो ,जिन पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया हो।दलितों का वर्ग पुरातन काल से वर्गशील रहा है।यह संघर्ष आज भी मौजूद हैं।दलित समाज में दलित लोग अपनी जरुरतों के लिए तरसता ,तड़पता रहा हैं।उसे इसी के बीच अपना जीवन व्यतीत करना प ड़ा।इनकी तकलीफ को कभी समझने और सुनने की जरुरत किसी ने नहीं की ,अपने जीवनकाल में गरीबी अपमान आदि को भोगे गये यथार्थ को अनेको दलित लेखक-लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथा में प्रस्तुत किया हैं ,ओमप्रकाश वाल्मीकि 'जूठन'डॉ. तुलसीराम 'मुर्दहिया' कौल्शया वैसन्ती का 'दोहरा अभिशाप'आदि में उन्होंने अपने और समाज में दलितों पर हो रहे अत्याचार को व्यक्त किया है।दलितों के प्रति समाज के लोग क्या सोच रखते थे।आज लोग शिक्षित हो गये हैं ,किंतु उसकी मानसिकता आज भी नहीं बदली है।आश्यर्य होता है कि भारतीय समाज एक ही प्राणी होने का मान करता है तो फिर वह वर्ण व्यवस्था में दलितों के प्रति अपनी कट्टरता क्यों रखता हैं।हैं।दलित जाति के लोगों को छुने भी पाप समझा जाता था।सदियों से दबे दलित अपने अधिकारों के लिए आदोलनों

में खड़े हो रहे है।आज भी शोषण होता है लेकिन शोषण करने का तरीका बदल चुका हैं ,हाल ही में पिछले दिनों एन.सी.आर.टी की कक्षा11की किताब जिसमें डॉ.अम्बेडकर पर बनाया गया कार्टून ,जिससे जवाहर लाल नेहरू द्वारा चाबूक मारते हुआ दिखाया जा रहा है।जब डॉ.अम्बेडकर पर बनाया गया कार्टून तो बनाने वाले के खिलाफ कोई मुकदमा दर्ज नहीं किया गया लेकिन जब दलित पत्रकार सत्येन्द्र मुरली ने गांधी पर कार्टून बनाया तो उसके खिलाफ तुरन्त कार्यवाही करते हुए जयपुर पुलिस ने एफ.आई.आर दर्ज कर ली।यह शोषण नहीं तो क्या हैं।देश में छुआछुत की ज ड़ को खत्म करने के लिए समाज विकास के साथ-साथ राष्ट्र का विकास सम्भव हैं। हमारे देश में आधे से अधिक लोग भूखे रहते हैं,जिन्हें भोजन नहीं मिलता वह लोग कुपोषण के शिकार हो जाते हैं।दूसरी और हमारे देश में यह है कि यह अमीर व्यक्ति हमारे देश में पांच नंबर पर हैं।यह बात हमारे लिए गर्व या शर्म की होनी चाहिए।इसी तरह दलितों के प्रति कई सुझाव और दिए हैं।बहुत सारे रचनाकारों ने इसके बारे में लिखा हैं।सबसे पहले दलितों में जागरुकता लाना सबसे जरुरी हैं।

1.जातीय भेदभाव को खत्म करना- सबसे पहले समाज में रह रहे लोगों को जातीयता से ज्यादा इन्सानियत का महत्व बताना चाहिए।सारे मनुष्य एक समान हैं ,सभी को बनाने वाला एक ही भगवान है। सभी लोगों में एक जैसा रक्त होता है।

2.मानसिक बदलाव-समाज में रह रहें लागों को अपनी सोच बदलनी होगी।तभी भेद-भाव खत्म होगा।मानसिक बदलाव घर से ही शुरू होता है ,घर पर सबसे पहले बच्चे को जागरुक करना चाहिए।जाति कुछ नहीं होती सब लोग एक बरावर होते हैं। उसके बाद स्कूलों में अध्यापकों द्वारा छात्रों को जागरुक करना चाहिए।

3.शिक्षित होना-दलित लोगों का शिक्षित होना सबसे महत्वपूर्ण है।यदि दलित लोग शिक्षित होंगे तो वह अपने बच्चों को शिक्षित बनाने के लिए स्कूल भजेंगे तभी वह अपनी जाति के प्रति सचेत होंगे और उन्हें किसी को अपने जाति को बताते समय शर्म नहीं आएगी।

4.दलितों को अपने प्रति स्वयं जागरुक होना-दलित लोगों को अपने अपनी जाति बताने के लिए शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए।यदि वह अपनी जाति छिपाते हैं तो वह खुद ही अपनी जाति को नीचा दिखा रहे हैं ।

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

5.दलित स्त्री को समाज में समान अधिकार देना चाहिए-उच्च जाति वाले लोगों को दलित स्त्री के प्रति अपनी सोच बदलनी चाहिए।दलित स्त्री के लिए ऐसी संस्था बनाई चाहिए जहां आकर वह जागरुक हो सकें,और समाज में जागरुकता से रह सके।

6.दलितों के प्रति छुआछुत को खत्म करना-सबसे पहले समाज में रह रहे लोगों को अपनी सोच बदलनी चाहिए।जब लोगों की सोच बदलेगी तभी वह भेदभाव भूल कर मिलकर रहेंगे। इसके लिए घर से लेकर स्कूल तक यह शिक्षा देनी चाहिए की सब एक लोग बराबर हैं।

7. सरकार के द्वारा कई कानून लागू करने चाहिए-सरकार को ऐसे कानून बनाने चाहिए कि जो लोग दलितों को बिना किसी गलती से मारपीट करें उनको सजा मिलनी चाहिए।ताकि लोग एक दूसरे से मारपीट ना करें और सब मिल कर रहें।

8.बेरोजगारी को खत्म करना-जब दलित लोग आप शिक्षित होगें तो वह अपने बच्चों को भी पढने के लिए स्कूल भजेंगे।जिससे दलित बच्चे शिक्षित होंगे और वह जान जाएगे कि उनके लिए क्या काम सही और क्या नहीं जिससे बाल मजदूरी भी खत्म हो जाएगी।

9.सरकार दलितों को ऐसे फंड दे जिससे उनकी गरीबी खत्म हो जाए-सरकार को उन दलित लोगों को फंड देने चाहिए जो झुग्गी-झोपडी में रहते है ताकि उनकी गरीबी दूर हो जाए।

10.दलितों को समाज में बराबर अधिकार देने चाहिए-समाज में रह रहे लोग एक बराबर हैं और सब लोगों को एक बराबर अधिकार देने चाहिए। ताकि सब लोग आपस में मिलजुल कर रहें,लोग आपस में भेदभाव ना करें ताकि दलित लोग भी समाज में अपने ढंग से जिन्दगी व्यतीत सकें।

यदि हम सही अर्थो में समाज में बदलाव चाहते हैं ,तो हमें ऐसे मुद्दे उठाने चाहिए जो पूर्णत : सामाजिक बदलावो में सहायक हों। भले ही मनुष्य आज आगे बढ गया है।कितुं उसकी सोच वह मानसिकता संकुचित ही है।

उपसंहार

भारतीय संदर्भ में समाज को मानसिक सोच और दृष्टिकोण में बदलाव लाने की आवश्यकता हैं,भले ही हमारी नई पीढ़ी शिक्षित हो चुकी है कितुं फिर भी बहुत सारे परिवर्तन किये जाने नीतियां को बदलाना और उन्हें लागू करने की आवश्यकता हैं।दलित एक जाति समूह सूचक शब्द है।यह एक वर्ग है जिसमें अनेक जातियां सम्मिलित हैं।समाज में व्यक्ति कितना भी बदल गया है ,परंतु उसका मन आज भी नहीं बदला है।वह आज भी कहीं न कहीं घृणा की भावना रखता है।हिन्दी साहित्य में जो दलितों ने अपने जीवन में भोगा है।उसे अपनी आत्मकथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है।जातिय भेदभाव निरंत्रता से चलता आ रहा है।हिंदी

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

के दलित साहित्य का उदय बीसवीं शताब्दी के नवे तथा दसवे दशकों में हुआ और कई हिंदी लेखकों को सातवें दशक में उभरे मराठी के दलित साहित्य से खासकर डॉ.अम्बेडकर की विचारधारा से प्रेरणा मिली।हिंदी का दलित साहित्य अब अपना व्यापक स्वरूप ग्रहण कर रहा है,पर पिछली शताब्दियों में भी दलित साहित्य बीज रूप में विद्यमान था।भले ही वह साहित्य की मुख्य धारा नहीं बन सका।उस बीज को लेखकों, विचारकों और समाज-सुधारकों ने अंकुरित किया तथा अब वह पल्लवित पुष्पित रूप में हमारे सामने है ,पर अधिसंख्य रचनाएं साधन-सुविधाओं के अभाव में अप्रकाशित हैं।संक्षिप्त रूप से कहा जा सकता है कि दलितों को अपने अधिकारों के लिए भी ल ड़ना पड़ रहा है। इसका कारण सवर्णों का दलितों से घृणा करना ।जिसके लिए उन्हें आज भी अपने भविष्य में समाधान होता नजर नहीं आ रहा। दलितों की अमानवीय समस्याओं पर कथा-साहित्य में कम लिखा गया है जबकि अस्पृश्पता,पर अधिक लिखा गया है।दलितों की समस्या के साथ और भी कई अन्य समस्या जुडी हुई है जैसे बच्चों की शिक्षा ,सफाई स्वास्थ्य और मनोरंजन आदि।इन सब से घर का वातावरण बनता है। से हालात में सरकारी स्कूलों में पढ़ने और मेहनत मजूरी कर के बड़े हुए हैं दलितों के बच्चे , आगे हाई स्कूल में प ढ़ने के लिए उनके पास पैसे नहीं होते थे।दलित लोग आज भी समाज में सामान चहते है।वह प ढ़ना चाहते है।समाज में लोग उनसे निम्न कार्य कराते है।दलितों पर अत्याचार आज भी कहीं ना कहीं ना मौजूद हैं।सारे लोग अंधविश्वासों में डूबे थे ,वह भूतों-प्रेतो पर अधिक विश्वास करते थे।दलितों के अलग देवी-देवते है वह इनकी अलग से पूजा करते है ,दलित लोग देवी देवतों को मानने के बजाय भूत प्रेतो को अधिक मानते थे।उन्हें खुश रखने के लिए बलि दी जाती थी ,कई बार उनको खुश करने के

लिए बच्चों तक की बलि देते थे।दलित लोगों को अपमानजनक बातों से संबोधन किया जाता था।दलित लोग अंधविश्वास में डूबे हुए थे ,वह भूतों पर विश्वास रखते थे उन्हें खुश रखने के लिए कई तरह की बलि देते थे।और बीमार होने पर भगत बुलाया जाता था ,उससे मरीज का इलाज कराया जाता था।यह सब काम रात को होते थे।दलितों की सामजिक समस्याओं का अंत करने के लिए उन्हें आर्थिक रूप से सुदृढ़ करना होगा।सामाजिक लोकतंत्र का सपना पूरा करने की दृष्टि से दलितों को ,अपनी दीनता-हीनता वाली भावना को बाहर कर आत्मसम्मानित नागरिक बनने हेतू पहले खुद समानता को आत्मसात करना होगा।दलितों को भी अपनी हीन भावना को दूर कर प्रगति के मार्ग पर चलना चाहिए।दलितों की स्थिति के बारे में साहित्य में बहुत सारे लेखको ने लिखा है।उन्होंने अपने नाटक,कहानियों के दलितों की स्थिति को प्रस्तुत किया हैं।दलितों को आर्थिक स्थिति के कारण कितनी परेशानीयों का सामना करना पड्ता था।पैसे न होने के कारण बहुत सारे लोग अशिक्षा ही रह जाते थे।अकाल के कारण कई दिनों तक लोग भूखे रहते थे ,और खाने के लिए कुछ नहीं मिलता था। अंत में हम कह सकते है कि दलित समाज में आज भी जागरूकता की आवश्कता है।आज भी शासक वर्ग उन पर अपना अधिकार जमाकर बैठा है।वह दलित लोगों को अपने काम के लिए इस्तेमाल कर रहा है। चुनाव के दौरान लोगों को कई तरह के लालच देकर उनको खरीदा जाता था।वह उनके कहने पर ही वोट डालते थे।लोगों को उनकी हर बात माननी पडती थी, ना मानने पर सजा मिलती थी।दलितों को अधिकार दिलाने के लिए कई नेताओं ने संघर्षे किए थे। डॉ.अम्बेडकर ने दलित समाज को राष्ट्रीय धारा में जो ड़ने के लिए अनेक प्रयास किये और उन लोगों में जागरूकता फैलाई।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

Dr.Tulsiram krit 'Murdahiya' our Om Prakash Balmiki krit 'Joothan' aatmkathaon main dalit sangharsh

1.तुलसीराम"मुर्दहिया" नई दिल्ली,राजकमल प्रकाशन, 2012.

2.वाल्मीकि ओमप्रकाश"जूठन" नई दिल्ली,राधाकृष्ण प्रकाशन, 1997

सहायक ग्रंथ

1.कमल,राजवीर सिंह, "दलित समाज दशा औरदिशा",नईदिल्ली,कांति पब्लिकेशस,2007

2. कर्दम,जयप्रकाश,"दलित विमर्शसाहित् के आईने में साहित्य.संस्थान",गाजियावाद,2006

3. किरणबाला "हिन्दी भाषा और साहित्य", बरेली, पब्लिशिंग हाऊस प्रकाश1994

4.गुप्ता, रमणिका, "दलित चेतना साहित्यिक एवं सामजिक सरोकर" ,दिल्ली, समीक्षा प्रकाशन, 2001

5.चन्द्र, सुभाष,"दलित मुक्ति आन्दोलन सीमाएं और संभावनाएं" ,पंचकूला(हरियाणा)आधार प्रकाशन 2010.

6. चतुवैदी,रमेशचंद्र, "बीसवीं सदी की हिंदी दलित कविता",गाजियाबाद,संस्थान 2008.

7.चौबे,देवेन्द्र, "आधुनिक साहित्य में दलित विमर्श "नई दिल्ली,ओरियट ब्लैकस्वोन प्राइवेट लिमिटेड 2009.

8.तिवारी,नंदकिशोर, "चांद छुत अंक",नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन2008.

9.दुबे,अभयकुमार, "आधुनिकता के आईने में दलित",नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन 2002.

10.पवार,किशोर आर,"भारतीय समाज में अंधविश्वास",कानपुर,चिंतन प्रकाशन 1998.

11. प्रसाद ,माता, "दलित साहित्य में प्रमुख विधाएं",गाजियाबाद,आकाश पब्लिशर्स,2009.

12.बेचैन,श्यौराज सिंह ,"उत्तर सदी के हिंदी कथा-साहित्य में दलित विमर्श" ,नई दिल्ली , अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स(प्रा.)लिमिटेड,2014.

13.बैचान,श्यौराज सिंह , चौबे, देवेन्द्र, "चिन्तन की परम्परा और दलित साहित्य ", बिहार,नवलेखन प्रकाशन,2000.

14.भारती,कंवल, "दलित विमर्श की भूमिका",इलाहाबाद, इतिहास बोध प्रकाशन 2004.

15.मीनू,रजतरानी, "हिन्दी दलित कविता", नई दिल्ली,नवभारत प्रकाशन 2009

16.मकवाणा,जीतूभाई,"समकालीन हिंदी दलित साहित्य:एक अध्याय ",नडियाद,दर्पण प्रकाशन2004.

17.मिस्र,शिवबाबू ,"जूठन एक विमर्श",नई दिल्ली,राधाकृष्ण प्रकाशन2006

18.राक्षसमुद्रा "नई सदीं की पहचान:श्रेष्ठ दलित कहानियां" ,इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन 2004.

19. रणसुभे,सूर्यनारायण, "डा.बाबा साहब अंबेडकर", नई दिल्ली,राधाकृष्ण प्रकाशन1998

20.वाल्मीकि, ओपप्रकाश, "दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र",नई दिल्ली,राधाकृष्ण प्रकाशन 2014.

21. वाल्मीकि,ओमप्रकाश, "सफाई देवता", नई दिल्ली,राधाकृष्ण प्रकाशन 2008.

22.वाल्मीकि, ओमप्रकाश,"वस्स बहुत हो चुका "(काव्य संग्रह) , नईदिल्ली, वाणी प्रकाशन1997.

23.वरके,चन्द्रकुमार,"दलित साहित्य आन्दोलन",जयपुर,रचना प्रकाशन1998.

24.वाल्मीकि,ओमप्रकाश "दलित अवधारणा" ,गाजियाबाद,लता साहित्य सदन ,प्रकाशन 2010.

25. शत्रुघ्नकुमार, "दलित आंदोलन के विविध पक्ष",गाजियाबाद, आकाश पब्लिशर्स,2009.

26. शर्मा,श्रीनिवास, "हिन्दी साहित्य का इतिहास",नई दिल्ली, अशोक प्रकाशन2000

27.सिंह,श्रीभगवान,"गाँधी औरदलित भारत-जागरण ",नई दिल्ली ,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 2008.

28.सिंह,एन, "दलित साहित्य चिंतन के विविध आयाम",गाजियाबाद,आकाश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्युटर्स प्रकाशन2009

29. सिंह , एन "दलित साहित्य और युगबोध ",गाजियाबाद, लता साहित्य सदन , 2005

30.स्वामी,सच्चिदानंद, "अधोगति का मुल वर्णव्यवस्था",अहमदाबाद,गूर्जर प्रकाशन,2000

शोध ग्रंथ-

1. पाण्डेय,शिवनाथ, "समकालीन हिन्दी पत्रिकाओं में नारी एवं दलित विमर्श" पी.एच डी.थीसीस,वीर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,जौनपुर, प्रिंट
2. नागर,नीलिमा, "दलित चेतना का स्वरूप एवं विकास ",पी. एच.डी. थीसीस ,वीर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय,जौनपुर,2014,प्रिंट
3. रमेशभाई,यादव,"दलित विमर्श और डा .धर्मवीर की आलोचना दृष्टि" पी.एच.डी.थीसीस,सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्ल्भ विद्यानगर,गुजरात,201प्रिंट
4. एम,आर,वाढेर,"दलित विमर्श एवं ओमप्रकाश वाल्मीकि का साहित्य"पी.एच.डी.थीसीस ,सौराष्ट्र विश्वविद्यालय,राजकोट,2015, प्रिंट
5. चन्द्र, सागर "जगदीश चन्द्र के उपन्यास में दलित विमर्श"एम .फिल थीसीस,दिल्ली यूनिर्वसिटी,2014 प्रिंट

पत्रिकाएं

1 सिंह '.शिवप्रसाद, काशिका' हिन्दी विभाग,काशी विश्वविद्यालय, वाराणसी

2.सुत्री तारा परमार,आश्वस्त'56 अंक,अप्रैल2008.

3. शर्मा,योगेन्द्र दन्त 'आजकल'आजकल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

4. पाठक,रमन 'रमण,भ्रमण,गुजरात मित्र एंव गुजरात दर्पण'बडौदा,2007

5 गुप्ता,रमणिका 'युद्वरत आम आदमी' नई दिल्ली जुलाई- सितंबर 2008

6. पटेल,रजीव 'ताजा कलम' 20 फरवरी 2008

7. शर्मा, राधेश्याम 'मधुमती' जुलाई 1997

8. चौहान,सूरजपाल 'दैनिक भास्कर' 2007

9. चंद्रपाल,'हंसमुख बावजी मूल निवासी आंदोलन' अहमदाबाद ,सिंतबर 2007

10. श्रीवास्तव,अनिल 'कथ्यरूप' अंक 23 अप्रैल-जून 1996.

शब्द-कोश

1. वर्मा,धीरेन्द्र 'हिन्दी साहित्य कोश' ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी. 1963
2. वसु,नगेन्द्र नाथ 'हिन्दी विश्वकोश' वी. आर पब्लिशिंग कार्पोरेशन विवेकानन्दनगर , दिल्ली 1986.
3. 'अंग्रेजी 'हिन्दी कोश' फादर कामिल बुल्के, 1987
4. 'संस्कृत हिन्दी शब्द कोश' वामन शिवराम आप्टे, 1968

5. ‘आदर्श हिन्दी शब्दकोश’आर. सी पाठक, 1958